04 - जिस बगावत से बनी टीएमसी वही उसे तोड़ेगी?

05 - स्थानीय बाजार पर असर चुनौतीपूर्ण या उत्प्रेरक?

A Daily News Magazine

भोपाल

शनिवार, 13 जून, 2026

06 - पल-पल में गहराता रहस्य - चेकमेट

07 - संदीपनी विद्यालय शाहगंज - जहां आधुनिक शिक्षा...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 281, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

'कॉकरोच जनता पार्टी' क्या बड़ा राजनीतिक बदलाव ला पाएगी?

आशुतोष

कॉकरोच क्रांति नहीं करते। वो लगातार मानव जाति को बस अपने होने का एहसास कराते हैं। उनके बारे में ये भ्रांति भी है कि वो परमाणु युद्ध के बाद भी ज़िंदा रहते हैं। परमाणु विभीषिका भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाती। ऐसे में कॉकरोचों ने जब जंतर मंतर पर शिक्षा मंत्री के इस्तीफ़े की मांग को लेकर, प्रदर्शन किया तो किसी को शायद ये उम्मीद नहीं थी कि धर्मेंद्र प्रधान अपने पद से इस्तीफा नहीं देंगे। कॉकरोच आये, कुछ घंटे हंगामा किया और चल गये। ये वायदा करके कि वो फिर आयेंगे अगर प्रधान ने इस्तीफा नहीं दिया तो। ये सब जब जानते हैं कि मोदी सरकार में इस्तीफ़े नहीं होते। ये बात रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह बहुत पहले कह चुके हैं। ऐसे में शिक्षा मंत्री इस्तीफा दे कर कॉकरोच आंदोलन को गरिमा प्रदान करेंगे, इसकी संभावना बहुत कम है। क्योंकि इस्तीफा देने का अर्थ है अपनी गलती मानना जो इस सरकार का स्वभाव नहीं है। मोदी सरकार वो गलती नहीं करेगी जो मनमोहन सिंह ने की थी जब विपक्ष और मीडिया के दबाव में मंत्रियों के त्यागपत्र ले लिये जाते थे। तक़रीबन आधा दर्जन से ज्यादा मंत्रियों ने तब पद छोड़ा था। तत्कालीन गृह मंत्री शिवराज पाटिल को तो इस वजह से पद छोड़ना पड़ा था कि उन्होंने मुंबई ब्लास्ट के बाद एक दिन में कई बार कपड़े बदले थे। यहाँ ये कहा जा सकता है कि मंत्रियों का पद छोड़ना एक तरह से जवाबदेह सरकार की निशानी है। लेकिन ये सरकार वही करेगी जो वो चाहेगी।

यहां ये नहीं भूलना चाहिये कि मनमोहन सरकार एक जवाबदेह सरकार थी जो जनता और विपक्ष के प्रति संवेदनशील थी, उनकी मांगों को गंभीरता से लेती थी। और उसे ये लगता था कि लोकतंत्र सिर्फ चुनाव जीतने का नाम नहीं है और सरकार की जवाबदेही सिर्फ चुनाव से तय नहीं होती बल्कि हर पल और हर समय सरकार की कसौटी तय होती रहती है। मनमोहन सिंह के समय जब अन्ना हजारे पहली बार जंतर मंतर पर बैठे तो तीन दिन में ही सरकार के सर्वोच्च स्तर से आंदोलनकारियों से संपर्क शुरू हो गया था और उनकी मांगों पर विचार किया जाने लगा था और पांचवें दिन लोकपाल बिल को बनाने के लिये सरकार के साथ सिविल सोसाइटी के लोगों के साथ एक कमेटी बन गई थी ।

इसी तरह रामलीला मैदान पर जब अन्ना हजारे दोबारा आमरण अनशन पर बैठे थे तो तेरह दिन में सरकार ने लोकपाल बिल के संदर्भ में संसद में एक प्रस्ताव पास कर अपनी प्रतिबद्धता को दोहरा दिया था। आज वो बातें एक सपने की तरह लगती हैं। एक ख्याल जो भारत के लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती का प्रमाण देता था कि सरकार सिर्फ़ चुनाव के लिये नहीं होती बल्कि वो जनता के सवालों के जवाब तब भी देती है जब चुनाव नहीं हो रहे होते। मीडिया की बातों को वो संजीदगी से लेती है, आज की तरह मीडिया को अपना ग़ुलाम नहीं बनाती।

कॉकरोच जब प्रदर्शन के लिये उतरे तो मीडिया ने उसको पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया। जबकि अन्ना के आंदोलन के समय मीडिया ने 24 घंटे दिखाने का काम किया था। मीडिया की कवरेज का हाल ये था कि पूरे देश में गांव- गांव शहर-शहर कैंडल मार्च निकलने लगे थे और राष्ट्रवाद का वो ज्वार चढ़ा था कि लगा कि देश में क्रांति होने वाली है। मुझे वो दिन याद है जब हर बातचीत अन्ना से शुरू होती थी और अन्ना से ही खत्म होती थी। लगा था कि देश जल्दी ही भ्रष्टाचार से मुक्त हो जायेगा। राजनीति साफ़ सुथरी होगी। जनता के मुद्दों पर चुनाव लड़े जायेंगे। लेकिन हुआ इसके उलट।

भ्रष्टाचार खत्म होने की जगह बढ़ गया। सरकारों की जवाबदेही तय होने की जगह सरकार पूरी तरह से निष्ठुर हो गई। राजनीति रोटी कपड़ा मकान की जगह हिन्दू मुस्लिम में तब्दील हो गई। भारत का विमर्श पूरी तरह से बदल गया। पूरी व्यवस्था का स्वरूप बदल गया। लोकतंत्र धीरे धीरे अधिनायकवाद में परिवर्तित हो गया जहां सरकार से सवाल करना देशद्रोह बन गया और हर उस व्यक्ति की देशभक्ति को कसा जाने लगा जो सत्ता की राय से सहमत नहीं है।

ऐसे में ये देख कर हैरानी ज़रूर हुई कि ये सरकार अचानक इतनी सदाशय और उदार कैसे हो गई कि एयरपोर्ट पर ही धरना प्रदर्शन की अनुमति दे दी गई। पुलिस की सहमति को दो नज़रिये से देखा जा सकता है। एक, सरकार को पूरी तरह से एहसास था कि कॉकरोचों के प्रदर्शन करने से कुछ होने वाला नही है। आयेंगे, शोर मचायेंगे और फिर चले जायेंगे। वैसा ही हुआ। दो, ये भी हो सकता है कि एयरपोर्ट पर उतरने के पहले से ही अभिजीत दिपके से बात हो गई हो कि कुछ ज्यादा बड़ा नहीं होगा, सरकार को तकलीफ नही दी जायेंगी। दोनों ही स्थितियों में फायदा सरकार को हुआ। उसे ये कहने का मौक़ा मिला कि वो पूरी तरह से लोकतांत्रिक है और उसके बारे में ये कहना गलत था कि वो असहमति को बरदाश्त ही करती। यानी सरकार के लिये जो आंदोलन परेशानी का सबब होना चाहिये था वो सरकार के लिये बड़ी पी आर एक्सरसाइज़ बन गई। यानी दुनिया को बताने का अवसर सरकार ने खोज लिया कि उसकी लोकतांत्रिक प्रतिबद्धता पर प्रश्न खड़ा करने वाले गलत है ।

वैसे भी कॉकरोच जनता पार्टी के पूरे स्वरूप और अंदाज में किसी भी तरह के अनुशासन की कमी साफ दिखाई देती है। इसके विपरीत अन्ना के आंदोलन में संगठन, लीडरशिप और दीर्घकालिक एंजेंडा स्पष्ट था। लंबी तैयारी और काफी विचार विमर्श के बाद लोकपाल बिल की तस्वीर को रखा गया था। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज, वकील, और पूर्व कानून मंत्री की मौजूदगी पूरे आंदोलन को एक गरिमा देती थी। कॉकरोच पार्टी में उस गंभीरता और गरिमा की कमी साफ दिखती है ।

सोशल मीडिया ने लोगों को इकट्ठा किया लेकिन इस बात कोई प्रमाण नहीं है कि सोनम वांगचुक के अलावा सिविल सोसाइटी की कोई शख्सियत प्रदर्शन में शामिल हुई । ऐसे में अन्ना आंदोलन से इसकी तुलना बेमानी है। और ये सोचना गलत होगा कि कॉकरोच किसी बड़े बदलाव का कारण बनेंगे । ज़्यादा से ज़्यादा ये कहा जा सकता है कि प्रेशर कुकर में गैस बहुत जमा हो गई थी, उसके फटने का ख़तरा पैदा हो गया था, कॉकरोच ने कुकर की सीटी का काम किया। गैस निकल गई और ख़तरा टल गया।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुप्रीम कोर्ट से लगा नटराजन को झटका, याचिका खारिज

- सड़क पर उतरी कांग्रेस, चुनाव आयोग के सामने विरोध प्रदर्शन, पुलिस से झड़प

नई दिल्ली/भोपाल (एजेंसी)। कांग्रेस नेता मीनाक्षी नटराजन का राज्यसभा चुनाव का नामांकन रद्द होने और इस मामले में सुप्रीम कोर्ट के झटके के बाद कांग्रेस कार्यकर्ता सड़क पर उतर आए हैं। शुक्रवार को याचिका खारिज होने के बाद शाम को कांग्रेस के कई विधायक व कार्यकर्ता कुछ ही देर में चुनाव आयोग के कार्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। कोर्ट ने कहा कि इस मामले में सीधे रिट याचिका नहीं सुनी जा सकती। अगर उन्हें फैसले पर आपत्ति है तो वे चुनाव याचिका दायर करें।

जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्रा और जस्टिस एएस चंदूरकर की बेंच ने कहा कि संविधान का अनुच्छेद 329 चुनाव प्रक्रिया में अदालतों के हस्तक्षेप को सीमित करता है। इसलिए सुप्रीम कोर्ट इस मामले में रिट पिटीशन पर सुनवाई नहीं कर सकता। नामांकन रद्द करने का फैसला सही था या गलत, अदालत ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की।

राष्ट्रपति भवन के लिए निकले नेताओं की पुलिस से झड़प

उधर, दिल्ली पहुंचे मध्य प्रदेश के कांग्रेस विधायकों ने राष्ट्रपति भवन तक मार्च निकालने की कोशिश की। पुलिस ने उन्हें रोकने के लिए सड़क पर बैरिकेडिंग कर दी। कांग्रेस नेता इस पर चढ़ गए तो पुलिस से उनकी झड़प हो गई। पुलिस ने हल्का बल प्रयोग करते हुए प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार समेत तमाम नेताओं को हिरासत में ले लिया। हालांकि, बाद में सभी को रिहा कर दिया गया।

जनता की अदालत में ले जाएंगे लड़ाई : मीनाक्षी नटराजन

शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट ने मध्य प्रदेश से कांग्रेस की राज्यसभा उम्मीदवार मीनाक्षी नटराजन की उस याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें उनके नामांकन पत्र रद्द किए जाने को चुनौती दी गई थी। याचिका खारिज होने के बाद मीनाक्षी नटराजन ने कहा, हम अपनी लड़ाई जारी रखेंगे। लोकतंत्र में एक और अदालत होती है, जनता की अदालत। हम अपनी लड़ाई उनके पास ले जाएंगे। मैं सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर कोई टिप्पणी नहीं करूंगी, क्योंकि ऐसा करना उचित नहीं होगा।

खड़गे बोले- पीएम मोदी के निर्देश पर ये सब किया गया

सुप्रीम कोर्ट में मीनाक्षी की याचिका खारिज होने के बाद कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा- कोर्ट का तर्क है कि हमें पहले चुनाव आयोग, फिर हाई कोर्ट और उसके बाद सुप्रीम कोर्ट जाना चाहिए। हालांकि, यह एक विशेष मामला है। जितना अधिक समय लगेगा, यह मामला उतना ही लंबा खिंचेगा। इसलिए हम चाहते थे कि सुप्रीम कोर्ट इस मामले में राहत दे। उन्होंने आगे कहा, कोर्ट ने ऐसा कहा है, इसलिए हम उसके निर्देशों के अनुसार हाई कोर्ट जाएंगे। हमारा मानना है कि यह कार्रवाई गैर-कानूनी, अनैतिक और लोकतंत्र विरोधी है। सरकार ने जो किया है, वह गलत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मंजूरी या निर्देश के बिना इतने बड़े कदम नहीं उठाए जाते। उनके निर्देश पर ये सब हुआ। खड़गे ने आरोप लगाया- हमारा मानना है कि ये कदम कांग्रेस पार्टी को कमजोर करने और लोकतंत्र को कमजोर करने की एक बड़ी साजिश के तहत जानबूझकर उठाए जा रहे हैं। हमारी नजर में, इनका उद्देश्य विपक्ष को परेशान करना और उसकी आवाज को दबाना है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने की ब्रिक्स देशों के कृषि मंत्रियों से मुलाकात

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर में आयोजित ब्रिक्स देशों के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में शामिल कृषि मंत्रियों एवं अन्य विदेशी प्रतिनिधियों एवं अतिथियों से मुलाकात की। उन्होंने अतिथियों का देश के दिल मध्यप्रदेश की औद्योगिक राजधानी इन्दौर में स्वागत किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी के सम्मान में रात्रि भोज भी दिया। अतिथियों के स्वागत के साथ मध्यप्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, आध्यात्मिक परंपरा और पर्यटन वैभव को प्रदर्शित करने वाले रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

- इन्दौर में अतिथियों और प्रतिनिधियों के सम्मान में दिया रात्रि भोज

सांस्कृतिक संध्या में प्रदेश की लोक कला, संस्कृति और आध्यात्मिक चेतना पर आधारित प्रस्तुतियों ने देश-विदेश से आए प्रतिनिधियों का मन मोह लिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा से मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता, ऐतिहासिक धरोहरों और पर्यटन स्थलों की विशेषताओं को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित किया गया।

सुप्रभात

क्यों किया करते हैं
हम झगड़ा हमेशा
तुम रहोगे हम रहेंगे
क्या हमेशा।
साधु से साधु मिले यह
न जरूरी
दुष्ट से पर दुष्ट जा
मिलता हमेशा।
कल जो गुजरा था बहुत
बेहतर सुनहरा
बाद में सबको यही
लगता हमेशा।
उनके भी सब काम
सबके सामने हैं
'कोट' जो करते .
कुरआं गीता हमेशा।
सामने है आज जो जैसा हमारे
क्या ज़माना है रहा ऐसा हमेशा।

- दिनेश मालवीय 'अश्क'

ट्रक ने ऑटो को उड़ाया तीन दोस्तों की मौत

मौसी के घर से लौट रहे थे तीनों, हादसे के बाद ट्रक ड्राइवर फरार

रीवा (नप्र)। रीवा में गुरुवार रात एक तेज रफ्तार ट्रक ने ऑटो को सामने से टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि ऑटो के परखच्चे उड़ गए। उसमें सवार तीन दोस्तों की मौके पर ही मौत हो गई। बताया जा रहा है कि तीनों युवक अपनी मौसी के घर घूमने गए थे और वहां से वापस लौट रहे थे।

सड़क पर तीनों युवकों के शव पड़े हुए मिले- बताया जा रहा है कि हादसे के समय ट्रक की रफ्तार करीब 90 किलोमीटर प्रति घंटा थी। तेज रफ्तार और लापरवाही को हादसे की मुख्य वजह माना जा रहा है। टक्कर के बाद ऑटो बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग तुरंत मदद के लिए दौड़े। पुलिस और एंबुलेंस को सूचना दी गई,।

बहुरी बांध और डिहया भटलो में मातम

हादसे के बाद मृतकों के पैतृक गांवों बहुरी बांध और डिहया भटलो में मातम का माहौल है। शुक्रवार सुबह जैसे ही इस घटना की खबर ग्रामीणों तक पहुंची, पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई। ग्रामीणों ने बताया कि तीनों ही युवक बेहद मिलनसार और व्यवहार कुशल थे, उनके असमय चले जाने से पूरा क्षेत्र स्तब्ध है।

ट्रक जब्त कर थाने में खड़ा किया

हादसे का शिकार हुए तीनों युवक एक ही ऑटो में सवार होकर यात्रा कर रहे थे। मृतकों की पहचान हरिशंकर चतुर्वेदी निवासी बहुरी बांध, आशीष उपाध्याय निवासी बहुरी बांध और शैलेंद्र तिवारी निवासी डिहया भटलो के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि हरिशंकर अपने दो दोस्तों को लेकर मौसी के घर गया था, वहां से लौटते समय यह हादसा हो गया। घटना की सूचना मिलते ही रीवा पुलिस बल मौके पर पहुंचा। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से शवों को कब्जे में लेकर पंचनामा तैयार किया और उन्हें पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

शूटर जसपाल राणा का निधन

- कॉमनवेल्थ गेम्स में 9 गोल्ड जीते

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के दिग्गज शूटर जसपाल राणा का शुक्रवार को निधन हो गया। 1 जून को जर्मनी से लौटते समय फ्लाइट में 49 साल के राणा की तबीयत बिगड़ी थी। दिल्ली पहुंचने पर उन्हें एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां उनके हार्ट में स्टेंट डाला गया था। नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया के प्रेसिडेंट कालीकेश नारायण सिंह देव ने उनके निधन की पुष्टि की। जसपाल राणा ने कॉमनवेल्थ गेम्स में 9 बार गोल्ड मेडल जीते थे। इनमें लगातार 4 एडिशन के गोल्ड शामिल रहे। राणा पेरिस ओलिंपिक में डबल ओलिंपिक मेडल जीतने वाली शूटर मनु भाकर के कोच भी थे। उन्हें फरवरी 2025 में 25 मीटर पिस्टल के लिए भारतीय जूनियर टीम का हाई परफार्मेंस कोच बनाया गया था।

पांच महीने में पहली बार 4 प्रतिशत के करीब पहुंची महंगाई

- मई में बढ़कर 3.93 प्रतिशत हुई, खाने-पीने की चीजें और ट्रांसपोर्टेशन महंगा होने से बढ़ा दबाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में खुदरा महंगाई की रफ्तार एक बार फिर बढ़ गई है।

मई महीने में यह बढ़कर 3.93 प्रतिशत पर पहुंच गई है, जो अप्रैल में 3.48 प्रतिशत थी। पिछले 5 महीनों में यह पहली बार है जब खुदरा महंगाई रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के मीडियम-टर्म टारगेट 4 प्रतिशत के बेहद करीब पहुंच गई है।

5 महीने में पहली बार 4 प्रतिशत के करीब पहुंची महंगाई- 2026 की शुरुआत में महंगाई दर काफी कम थी। जनवरी में यह 2.74 प्रतिशत के स्तर पर थी, जो मई तक लगातार बढ़ते हुए 3.93 प्रतिशत पर आ गई है।

पिछले महीने यानी अप्रैल के मुकाबले मई में खुदरा महंगाई में 0.75प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। मासिक आधार पर कीमतों में आया यह उछाल पिछले 16 महीनों में सबसे तेज है, जो दिखाता है कि बाजार में लगातार प्राइस प्रेशर बढ़ रहा है।

- ग्रामीण इलाकों में खाने-पीने की चीजें ज्यादा महंगी हुईं- इस बार भी महंगाई बढ़ने के पीछे सबसे बड़ी वजह खाने-पीने की चीजों के दामों में आई तेजी है। मई में कंज्यूमर फूड इन्फ्लेशन बढ़कर 4.78 प्रतिशत पर पहुंच गया, जो अप्रैल में 4.2 प्रतिशत था। खास बात यह है कि शहरों के मुकाबले ग्रामीण भारत में खाद्य महंगाई दर ज्यादा रही। मई में ग्रामीण इलाकों में फूड इन्फ्लेशन 4.85 प्रतिशत दर्ज किया गया, जबकि शहरी केंद्रों में यह आंकड़ा 4.66 प्रतिशत रहा।

एक ग्राहक को 200 लीटर से ज्यादा डीजल नहीं

- कॉमर्शियल यूजर रिटेल पेट्रोल पंप से ईंधन नहीं खरीद पाएंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम ग्राहक एक दिन में अधिकतम 200 लीटर ही डीजल खरीद पाएंगे। इस डीजल को दोबारा बेचने पर पूरी तरह रोक रहेगी। इसके अलावा अब फैक्ट्रियों और कॉमर्शियल यूजर्स को रिटेल

आउटलेट से ईंधन नहीं मिलेगा। केंद्र सरकार ने 11 जून 2026 को इसे लेकर आदेश जारी किया है। अब इन बड़े उपभोक्ताओं को केवल बल्क सेल पॉइंट्स से ही ईंधन खरीदना होगा।

सरकार ने यह कदम देश के कुछ हिस्सों में रिटेल पंपों पर अचानक बढ़ी असामान्य बिक्री को देखते हुए उठाया है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 13 जून 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

बहू ने 85 साल के ससुर को हाथ पकड़कर घसीटा

वीडियो सामने आने के बाद आरोपी मां-बेटी ने जहर खाया

मैहर (नप्र)। मैहर जिले के नादन गांव से झकझोर देने वाला वीडियो सामने आया है, जिसमें एक बहू अपने 85 वर्षीय बुजुर्ग ससुर को बेरहमी से घसीटते हुए दिख रही है। इस घटना के बाद पैदा हुए पारिवारिक तनाव के बीच आरोपी महिला और उसकी बेटी ने कीटनाशक खा लिया। दोनों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

विवाद की वजह- जमीन और बुजुर्ग की देखभाल- पुलिस के मुताबिक, बुजुर्ग छोटे लाल गौतम (85) के परिवार में जमीन और उनकी देख-रेख को लेकर लंबे समय से कलह चल रही थी। छोटे लाल के तीन बेटे (संत कुमार, सनत कुमार और अजय कुमार) हैं। छोटे लाल ने अपनी करीब ढाई एकड़ जमीन तीनों बेटों में बराबर-बराबर बांट दी थी।

अमेरिकी हमले में तीन भारतीयों की मौत पर भड़का भारत

- यूएस राजनयिक को दूसरी बार बुलाकर कड़ी आपत्ति जताई

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओमान तट के पास कमर्शियल जहाज पर हुए हमले में तीन भारतीय नाविकों की मौत के मामले में भारत ने कड़ा रुख अपनाया है। भारत ने शुक्रवार को अमेरिकी दूतावास के प्रभारी अधिकारी जेसन मीक्स को तलब किया और ओमान के तट के पास भारतीय चालक दल के सदस्यों वाले कमर्शियल जहाजों पर अमेरिकी नौसेना के हमलों को लेकर कड़ा विरोध दर्ज कराया। इस हफ्ते में यह दूसरी बार है जब भारत अमेरिकी दूतावास के प्रभारी अधिकारी को तलब किया है।

राहुल गांधी बोले- 3 भारतीयों की मौत पर भी मोदी खामोश

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में भारतीय नाविकों की मौत को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा है। उन्होंने आरोप लगाया कि तीन दिनों में तीन जहाजों पर अमेरिकी हमलों में तीन भारतीयों की जान गई, लेकिन प्रधानमंत्री ने इस पर अब तक एक शब्द भी नहीं कहा।

तुम मुझे इंजॉय करा दो

क्रबिस्तान लेकर युवक को पहुंचा डॉक्टर टच करने लगा प्राइवेट पार्ट, लोगों ने जमकर पीटा

उमरिया (नप्र)। मध्य प्रदेश के उमरिया जिले में एक सिविल सर्जन डॉक्टर की पिटाई का मामला सामने आया है। यहां पदस्थ डॉक्टर केसी सोनी पर एक युवक ने यौन शोषण का आरोप लगाया। जिसके बाद भीड़ ने जमकर पिटाई की। वहीं, सिविल सर्जन डॉक्टर केसी सोनी ने मारपीट के दौरान सोने की अंगूठी और कैश पैसे छीनने का भी आरोप लगाया है।

खुद को बताया मैं यहां नया हूं

पीड़ित युवक ने बताया कि मैं सगरा चौराहे में बैठा था। वहां से केसी सोनी निकले और कहा कि बोले कि मुझे सिगरेट पीना है। मैंने उन्हें पता बता दिया लेकिन उन्होंने कहा कि मैं उमारिया में नया हूं जिस कारण से मुझे कोई जानकारी नहीं है। उसके बाद मैंने उन्हें सिगरेट लाकर दी। जिसके बाद उन्होंने कहा कि मैं अकेले और सड़क में नहीं पीता हूं। चलो कहीं किनारे में चलकर पीते हैं।

उम्र रोकने की दवा का पहली बार इंसान पर हुआ परीक्षण

- उम्र के असर को उलटने वाला इंजेक्शन ग्लूकोमा पीड़ित को लगाया

बोस्टन (एजेंसी)। मेडिकल साइंस के सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों में से एक 'रिवर्स-एजिंग' यानी बुढ़ापा रोकने की दवा का इंसानों पर पहला ट्रायल शुरू हो गया है। पहली बार उम्र के असर को उलटने वाला इंजेक्शन किसी इंसान को लगाया गया है। अमेरिका के बोस्टन स्थित बायोटेक स्टार्टअप 'लाइफ बायोसाइंसेज' ने बताया कि उनके पहले मरीज को सेल्यूलर रीप्रोग्रामिंग का इंजेक्शन दे दिया गया है। परीक्षण के तहत यह इंजेक्शन ग्लूकोमा (काला मोतिया) से पीड़ित मरीज की एक आंख की पुतली में लगाया गया है। इस ट्रायल का मुख्य उद्देश्य उम्र बढ़ने के कारण कमजोर हो चुकी कोशिकाओं को फिर से युवा और सक्रिय बनाना है। अगले 6 महीने तक वैज्ञानिक इसके असर और साइड इफेक्ट्स पर नजर रखेंगे।

- **इससे पहले चूहों और बंदरों पर हो चुका है सफल टेस्ट-** अब डॉक्टर और वैज्ञानिक आने वाले कई महीनों तक मरीज की बारीकी से निगरानी करेंगे, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह तकनीक इंसानी शरीर के लिए पूरी तरह सुरक्षित है या नहीं। इस थेरेपी में सबसे पहले मरीज की आंख में एक सिंगल जीन थेरेपी इंजेक्शन दिया गया है। इसके बाद कुछ हफ्तों तक एंटीबायोटिक दवाओं का एक विशेष कोर्स कराया जाएगा। यह एंटीबायोटिक दवा शरीर के भीतर जाकर उन तीन इलाज करने वाले जीनों के लिए 'ऑन स्विच' का काम करेगी, जो कोशिकाओं को रीप्रोग्राम (युवा) करना शुरू करते हैं। इससे पहले चूहों और बंदरों पर हुए टेस्ट में इसने उनकी रोशनी सफलतापूर्वक वापस लौटा दी थी। इस थैरेपी के लिए इंसानों की आंख को इसलिए चुना गया है, क्योंकि आंख शरीर के बाकी हिस्सों से अलग और सुरक्षित होती है। इससे साइड इफेक्ट्स पर नजर रखना भी आसान होता है।

- **परीक्षण सफल रहा तो एजिंग थेरेपी का नया दौर-** लाइफ बायोसाइंसेज के सीईओ जेरी मैकलॉघलिन ने कहा कि यह उनकी कंपनी या एजिंग बायोलॉजी ही नहीं, पूरे मेडिकल साइंस के लिए संभावित रूप से बड़ा और परिवर्तनकारी पल है। अगर यह क्लिनिकल ट्रायल सफल रहा, तो एजिंग थेरेपी में नया युग शुरू हो सकता है। लक्ष्य पूरे शरीर की कोशिकाओं को फिर से युवा और सक्रिय बनाना है, ताकि उम्र बढ़ने के साथ डीएनए के काम करने और उसके एक्सप्रेशन के तरीके में सुधार हो सके।

अरबपतियों और फार्मा कंपनियों का निवेश

इस तकनीक में अमेजन के संस्थापक जेफ बेजोस और ओपनएआई के सैम ऑल्टमैन समेत कई बड़े निवेशकों ने पैसा लगाया है। एली लिली और मर्क जैसी दवा कंपनियां भी इस आइडिया में निवेश बढ़ा रही हैं। इंसानों पर ट्रायल से पहले यह रिसर्च चूहों और बंदरों तक ही सीमित थी, जो अब इंसानों तक पहुंच गई है।

महाकाल सवारी के प्रसिद्ध 'हाथी श्यामू' को 'वंतारा' भेजने की साजिश!

मालिक सरमन का बड़ा आरोप, नहीं दिए ब्लड सैंपल

उज्जैन (नप्र)। भगवान महाकाल की सवारी में शामिल होने वाले प्रसिद्ध हाथी 'श्यामू' के स्वास्थ्य और उसके मालिकाना हक को लेकर चल रहा विवाद एक बार फिर गहरा गया है। गुरुवार को इंदौर रोड स्थित साईनाथ कॉलोनी में उस समय हाईवोल्टेज ड्रामा देखने को मिला, जब पन्ना टाइगर रिजर्व, इंदौर और उज्जैन के विशेषज्ञों की संयुक्त टीम हाथी का रूटीन चेकअप करने और ब्लड सैंपल लेने पहुंची। हाथी के मालिक और उनके परिजनों ने टीम का कड़ा विरोध करते हुए खून का नमूना लेने से साफ इनकार कर दिया।

बगैर ब्लड सैंपल लिए लौटी टीम- बता दें कि मौके पर काफी गहमागहमी और बहस के बाद टीम को बिना ब्लड सैंपल लिए, केवल मल-मूत्र के नमूने लेकर ही लौटना पड़ा। इस जांच टीम में इंदौर चिड़ियाघर के प्रभारी डॉ. उत्तम यादव, उज्जैन के पशु चिकित्सक डॉ. मुकेश जैन और पन्ना टाइगर रिजर्व के डॉ. संजय गुप्ता शामिल थे। परिजन ने किसी की नहीं मानी।

हाथी को वंतारा या चिड़ियाघर भेजने की साजिश: मालिक का पलटवार- दूसरी ओर, हाथी के मालिक सरमन गिरी ने वन विभाग और डॉक्टरों के दावों को नकारते हुए सीधा आरोप लगाया कि कुछ रसूखदार लोग और विभाग मिलकर उनके हाथी को यहां से हटाकर गुजरात के 'वंतारा' या किसी अन्य चिड़ियाघर में शिफ्ट करने की साजिश रच रहे हैं, इसीलिए जानबूझकर उसे बीमार बताया जा रहा है।

हाथी का स्वामित्व और कागज मेरे पास

सरमन गिरी ने कहा, साल 2006 से इस हाथी का वैध स्वामित्व हमारे पास है। अगर श्यामू के पैरों में इतनी गंभीर समस्या है और वह अनफिट है, तो प्रशासन ने उसे महाकाल मंदिर की सवारी में शामिल होने की अनुमति क्यों दी? वह साल 2016 के सिंहस्थ से लेकर अब तक लगातार बाबा महाकाल की सेवा में पूरी तरह स्वस्थ होकर चल रहा है।

कभी भी गिर सकता है हाथी श्यामू: डॉक्टरों की चेतावनी

हाथी श्यामू की जांच करने व सैंपल लेने आए विशेषज्ञों और जांच टीम के अनुसार चिकित्सों ने स्थानीय मीडिया को बताया कि हाथी श्यामू वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत शेड्यूल-1 श्रेणी का अति-सुरक्षित वन्यजीव है। उन्होंने चौंकाने वाला दावा करते हुए कहा, हाथी के पैरों में गंभीर समस्या है और अब उसके पैर अंदर की तरफ मुड़ने लगे हैं। ऐसी गंभीर स्थिति में वह चलते-चलते कभी भी अचानक गिर सकता है। डॉक्टरों के मुताबिक, बीमारी और उसके संक्रमण की सही स्थिति जानने के लिए ब्लड टेस्ट बेहद जरूरी था, जो विरोध के चलते नहीं हो सका।

फाइनेंस कंपनी ऑफिस में खुद को लगाई आग

सागर में जब्त कार वापस लेने पहुंचा था युवक; बचाने में मैनेजर भी झुलसा

सागर (नप्र)। मध्यप्रदेश के सागर में मकरोनिया स्थित महिंद्रा फाइनेंस कंपनी के ऑफिस में एक युवक ने खुद पर पेट्रोल डालकर आग लगा ली। आग बुझाने की कोशिश में ब्रांच मैनेजर भी झुलस गया। दोनों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जबकि युवक की हालत गंभीर बताई जा रही है। युवक कार जब्त किए जाने से नाराज था। घटना शुक्रवार दोपहर की है। पुलिस के मुताबिक, जैसीनगर निवासी नीलेश कुमार जैन ने महिंद्रा फाइनेंस से कार फाइनेंस कराई थी। दो किस्तें बकाया होने के कारण कंपनी ने दमोह से वाहन जब्त कर लिया था। शुक्रवार को नीलेश कार वापस लेने के लिए फाइनेंस कंपनी के कार्यालय पहुंचे थे।

कार को लेकर कंपनी कर्मचारियों से हुई बहस- कार को लेकर उनकी कंपनी कर्मचारियों से बहस हो गई। इसी दौरान उन्होंने अपने ऊपर पेट्रोल डालकर आग लगा ली। अचानक हुई घटना से कार्यालय में अफरा-तफरी मच गई। कर्मचारियों और अधिकारियों ने आग बुझाने का प्रयास किया। इस दौरान ब्रांच मैनेजर भी झुलस गए। गंभीर रूप से झुलसे नीलेश को पहले बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज ले जाया गया, लेकिन हालत नाजुक होने पर उन्हें निजी अस्पताल रेफर कर दिया गया।

परिजनों का आरोप- 10 दिन से परेशान कर रही थी कंपनी- घायल युवक के रिश्तेदार नीरज कुमार जैन ने आरोप लगाया कि कार की केवल दो किस्तें बाकी थीं, इसके बावजूद कंपनी ने वाहन जब्त कर लिया था।

लखनऊ में इंडिगो फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग

टॉयलेट में टिशू पेपर पर लिखी मिली बम से उड़ाने की धमकी

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ से दिल्ली जाने वाली इंडिगो फ्लाइट की आज चौधरी चरण सिंह इंटरनेशनल एयरपोर्ट, लखनऊ पर इमरजेंसी लैंडिंग हुई। फ्लाइट हवा में ही थी, तभी टॉयलेट में एक टिशू पेपर मिला, जिस पर बम लिखा था। इसके बाद पायलट ने एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) को सूचना दी और इमरजेंसी लैंडिंग की अनुमति मांगी।

एटीसीने एयरपोर्ट अथॉरिटी और सुरक्षा एजेंसियों को अलर्ट किया, फिर लैंडिंग की अनुमति दी। इसके बाद सुबह 11:15 बजे फ्लाइट (6ई-2111) को लखनऊ एयरपोर्ट पर उतारा गया। सभी 184 यात्रियों और उनके सामान को नीचे उतारा गया। करीब 3 घंटे तक चेकिंग चली। बम निरोधक दस्ता और अन्य एजेंसियों के जवानों ने फ्लाइट की जांच की।

ममता की हार के 14 दिन बाद ही टीएमसी टूटी

- बागियों का 18 मई को स्पीकर को भेजा लेटर सामने आया, 19 सांसदों के दस्तखत

कोलकाता (एजेंसी)। ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस(टीएमसी) में फूट अब तय है। विधानसभा के 80 में से 58 विधायकों के बगावत के बाद लोकसभा के बागी 19 सांसदों का लेटर शुक्रवार को सामने आया। मीडिया सूत्रों के मुताबिक इसे 18 मई को लोकसभा स्पीकर को भेजा गया था और अलग गुट बनाने की मांग की गई है।

इससे साफ है कि ममता की हार के 14 दिन बाद ही पार्टी में बगावत शुरू हो गई थी। इस चिट्ठी में यूसुफ पठान, सायोनी घोष, काकोली घोष और शताब्दी रॉय जैसे बड़े नाम शामिल हैं। एक नाम सामने नहीं आया है।

19 बागी लोकसभा सांसदों के नाम

लोकसभा सीट	सांसद	लोकसभा सीट	सांसद
बारासात	काकोली घोष दस्तीदार	घाटाल	दीपक अधिकारी (देव)
कूचबिहार	जगदीश चंद्र बसुनिया	झाड़ग्राम	कालीपद सोरेन
जांगीपुर	खलीलुर रहमान	मेदिनीपुर	जून मालिया
बहरामपुर	यूसुफ पठान	बांकुड़ा	अरूप चक्रवर्ती
मुर्शिदाबाद	अबू ताहेर खान	बर्धमान पूर्व	डॉ. शर्मिला सरकार
बैरकपुर	पार्थ भौमिक	हावड़ा	प्रसून बंधोपाध्याय
मथुरापुर	बापी हलदार	बोलपुर	असित कुमार माल
जादवपुर	सायोनी घोष	बीरभूम	शताब्दी रॉय
कोलकाता दक्षिण	माला रॉय	हुगली	रचना बनर्जी
आरामबाग	मिताली बाग		

मानसून झारखंड-ओडिशा पहुंचा, 9 दिन में 19 राज्य कवर

- मप्र-राजस्थान समेत 22 राज्यों में आंधी-बारिश का अलर्ट, बिहार में बिजली गिरने से 10 की मौत

भोपाल/जयपुर/लखनऊ/पटना (एजेंसी)। देश में मानसून लगातार आगे बढ़ रहा है। शुक्रवार को झारखंड और ओडिशा के कुछ हिस्सों में इसकी एंट्री हो गई। हालांकि, महाराष्ट्र में मानसून की रफ्तार अभी थोड़ी धीमी है।

अगले 3 दिन में मानसून के छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश में एंट्री करने की संभावना है। 4 जून को केरलम में दस्तक देने के बाद मानसून 9 दिन में 19 राज्यों तक पहुंच चुका है। मौसम विभाग के मुताबिक, गुजरात को छोड़कर बाकी सभी राज्यों में प्री-मानसून एक्टिव है। आज मध्य प्रदेश और राजस्थान समेत 22 राज्यों में बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। कई जगह 60 किमी तक की रफ्तार से हवाएं चल सकती हैं। बिहार में 12 जिलों में आंधी-बारिश हुई। 24 घंटें में 10डिग्री तक तापमान गिरा। बिजली गिरने से 10 लोगों की मौत हो गई।

इधर दिल्ली-एनसीआर और हरियाणा में गुरुवार रात कई इलाकों में 70-80 किमी की रफ्तार से हवाएं चलीं। इससे तेज गर्मी से राहत मिली।

मप्र-राजस्थान में चलेगी धूल भरी आंधी, तेलंगाना में हीटवेव का अलर्ट- मौसम विभाग ने मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और पंजाब समेत 22 राज्यों में आंधी-बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है।

अमेरिकी मौसम एजेंसी ने अल नीनो शुरू होने की पुष्टि की- अमेरिकी नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन ने अल नीनो शुरू होने की पुष्टि कर दी है।

मप्र श्योपुर में आंधी-बारिश से 4 लोगों की मौत

मध्य प्रदेश के श्योपुर जिले में शुक्रवार को आंधी-बारिश ने तबाही मचा दी। अलग-अलग हादसों में 4 लोगों की मौत हो गई। तेज हवाओं से रजपुरा गांव में दीवार गिर गई, जिससे एक ही परिवार के 4 लोग मलबे में दब गए। इनमें तीन की मौके पर मौत हो गई, जबकि एक घायल है। राजस्थान रेफर किया गया है।

ईरान के साथ आज जंग खत्म हुई : ट्रम्प

- अमेरिका-ईरान समझौते के लिए 6 मुद्दों पर सहमति, जिनेवा में होंगे हस्ताक्षर
- वे कभी परमाणु हथियार नहीं बनाएंगे, ईरान बोला- अभी हमने कोई फैसला नहीं लिया

तेल अवीव/तेहरान/वॉशिंगटन डीसी (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने शुक्रवार को दावा किया कि अमेरिका ने ईरान के साथ युद्ध खत्म कर दिया है। एक वर्चुअल रैली में ट्रम्प ने अपने समर्थकों से यह बात कही। उन्होंने यह भी दावा किया कि ईरान कभी परमाणु हथियार नहीं बनाएगा। ईरान और अमेरिका के बीच रविवार को स्विट्जरलैंड के जिनेवा में समझौते पर हस्ताक्षर हो सकते हैं। अमेरिका और ईरान के बीच यह अंतरिम डील इसी हफ्ते के आखिर में हो सकती है। इसमें युद्ध रोकने और होर्मुज जलडमरूमध्य खोलने के साथ-साथ ईरान के परमाणु बम ना बनाने पर बातचीत होगी।

- **ईरान का दावा- होर्मुज स्ट्रेट पर हमारा फुल कंट्रोल-** अमेरिका के साथ बढ़ते सैन्य तनाव के बीच ईरान ने दावा किया है कि होर्मुज स्ट्रेट पर उसका फुल कंट्रोल है। ईरानी सेना के वरिष्ठ अधिकारी एडमिरल हबीबोल्लाह सय्यारी ने कहा कि इस समुद्री मार्ग से कोई भी जहाज ईरान की अनुमति के बिना नहीं गुजर सकता। सय्यारी ने अमेरिका के उन दावों को भी खारिज किया, जिनमें कहा गया था कि हालिया हमलों में ईरानी नौसेना को भारी नुकसान पहुंचा है।

छिंदवाड़ा-रीवा समेत 7 जिलों में तेज आंधी का अलर्ट

- 60 किमी प्रति घंटा हो सकती है हवा की रफ्तार, मानसून के 3-4 दिन लेट होने का अनुमान

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में दक्षिण-पश्चिम मानसून की एंट्री 3 से 4 दिन देरी से हो सकती है। मौसम केंद्र के मुताबिक, दक्षिणी हिस्से के जिलों से मानसून 17-18 जून को दस्तक देगा। यदि सब ठीक रहा तो अगले 10 से 15 दिन में पूरे प्रदेश को कवर कर लेगा।
इससे पहले प्री-मानसून की एक्टिविटी जारी रहेगी। मौसम विभाग ने दोपहर के समय छिंदवाड़ा, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, सागर और बालाघाट में आकाशीय बिजली चमकने और मध्यम गरज के साथ तेज आंधी चलने का अलर्ट जारी किया है। हवा की रफ्तार 60 किमी प्रति घंटा तक हो सकती है। सतना, मैहर, सिवनी, मंडला, डिंडौरी, अनूपपुर, शहडोल, उमरिया, कटनी, भिंड, बैतूल, दमोह, जबलपुर, नरसिंहपुर में भी मौसम बदला रहेगा।

इन जिलों में गर्मी का असर

मौसम विभाग ने शुक्रवार को इंदौर, उज्जैन, रतलाम, झाबुआ, अलीराजपुर, धार, बड़वानी और खरगोन के लिए आंधी-बारिश का अलर्ट जारी नहीं किया है। यानी, यहां पर गर्मी का असर बना रहेगा। ग्वालियर में आधा इंच बारिश...मंडला, सिवनी-दतिया में गिरा पानी
मध्य प्रदेश में गुरुवार को आंधी-बारिश के साथ गर्मी का असर भी रहा। ग्वालियर में आधा इंच बारिश दर्ज की गई। वहीं, शाम तक मंडला, सिवनी, दतिया समेत कई जिलों में बारिश हुई। इधर, प्रदेश के कई शहरों में दिन के तापमान में बढ़ोतरी देखी गई। प्रदेश के 5 बड़े शहरों की बात करें तो ग्वालियर में सबसे ज्यादा 42 डिग्री दर्ज किया गया। जबलपुर में 41.3 डिग्री, उज्जैन में 39.7 डिग्री, इंदौर में 38 डिग्री और भोपाल में 39.7 डिग्री सेल्सियस रहा।
प्रदेश में सबसे गर्म खजुराहो और नौगांव रहे। यहां अधिकतम तापमान 43 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। दमोह में 42.8 डिग्री, सतना में 42.7 डिग्री, रीवा में 42.5 डिग्री, दतिया में 42.2 डिग्री, टीकमगढ़-मंडला में 42 डिग्री, उमरिया में 41.6 डिग्री, छिंदवाड़ा में 41.4 डिग्री, मलाजखंड में 41.1 डिग्री, रायसेन-राजगढ़ में 41 डिग्री, गुना में 40.7 डिग्री, खंडवा में 40.5 डिग्री, सागर में 40.4 डिग्री और श्योपुर में पारा 40 डिग्री सेल्सियस रहा।

रिटायर्ड आईएएस नियाज खान का विवादित पोस्ट

- बोले- मुस्लिम ज्यादा बच्चे पैदा करते हैं, जबरन नसबंदी कराए सरकार, जनता भ्रष्ट लोगों को चुनाव जिताती है

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश कैडर के रिटायर्ड आईएएस अधिकारी और लेखक नियाज खान एक बार फिर अपने बयानों को लेकर चर्चा में हैं। डॉन अबू सलेम की प्रेम कहानी और 'ब्राह्मण द ग्रेट' जैसे उपन्यास लिख चुके नियाज खान ने देश में बढ़ती आबादी को लेकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर विवादित टिप्पणी की है। उन्होंने सरकार से जबरन नसबंदी लागू करने की मांग करते हुए खासतौर पर मुस्लिम समुदाय का उल्लेख किया है।
नियाज खान ने शुक्रवार सुबह किए गए अपने पोस्ट में लिखा कि देश की डेढ़ अरब आबादी अब नासूर बन चुकी है। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि लोगों की जबरदस्ती नसबंदी कराने पर विचार किया जाए। उन्होंने लिखा कि लोग स्वयं नसबंदी कराएं या सरकार इसे अनिवार्य बनाए। खान ने आगे कहा कि मुस्लिम समुदाय में ज्यादा बच्चे पैदा होते हैं, इसलिए उनकी नसबंदी कड़ाई से कराई जानी चाहिए। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि ऐसा नहीं किया गया तो देश का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा।

जनता भ्रष्ट लोगों को चुनाव जिताती है

इसी दिन किए गए एक अन्य पोस्ट में नियाज खान ने देश में भ्रष्टाचार और राजनीतिक व्यवस्था पर भी सवाल उठाए। उन्होंने लिखा कि प्रचंड भ्रष्टाचार देश को भीतर से खोखला कर रहा है, लेकिन लोग मौन हैं और मुफ्त की सुविधाओं में मस्त हैं। उन्होंने कहा कि जनता भ्रष्ट लोगों को चुनाव जिताती है और लोगों का जमीर तथा आत्मा दोनों मर चुके हैं। ऐसे हालात में भारत के सुपरपावर बनने के दावे पर भी उन्होंने सवाल उठाए।
नेता सत्ता के लिए रातों-रात अपनी विचारधारा बदल लेते हैं- इसके अलावा गुरुवार को किए गए एक अन्य पोस्ट में नियाज खान ने देश में वैचारिक संकट की बात कही थी। उन्होंने लिखा कि राजनीतिक क्षेत्र में बड़ा वैचारिक संकट है और नेता सत्ता के लिए रातों-रात अपनी विचारधारा बदल लेते हैं। उनके मुताबिक धर्मनिरपेक्ष नेता पल भर में कट्टरपंथी बन जाते हैं और आम लोग मूक दर्शक बने रहते हैं, जिनकी सत्ता में कोई अहमियत नहीं होती।

हलालपुरा स्थित पटाखा दुकान में लगी भीषण आग

दमकल की 10 गाड़ियों ने पाया काबू

तीन घंटे तक चला ऑपरेशन

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में शुक्रवार सुबह एक बड़ा हादसा होते-होते बच गया। बैरागढ़ रोड में पटाखों की एक दुकान में अचानक धमाकों से दहल उठा। पटाखा दुकान में अचानक आग लगने से चारों तरफ अफरा-तफरी मच गई। आग लगने के कारण पटाखों में बार-बार धमाके होते रहे और आग की लपटें करीब 70 फीट ऊपर तक उठ गईं।
जानकारी के अनुसार, पटाखा दुकान हलालपुरा में मुख्य सड़क किनारे ही है। आग तड़के में लगने के कारण मार्केट में भीड़-भाड़ नहीं थी जिस कारण से किसी भी तरह की जनहानि नहीं हुई है। आग लगने की जानकारी मिलते ही दमकल विभाग की टीम और प्रशासन मौके पर पहुंचा। जिसके बाद स्थिति को नियंत्रण पर लिया गया।
तीन घंटे से ज्यादा चला ऑपरेशन- स्थानीय लोगों के अनुसार, बैरागढ़ रोड स्थित सुंदर वन गार्डन के ठीक सामने सोनी पटाखा दुकान है। इसी दुकान में तड़के करीब साढ़े 3 बजे आग लगी। आग लगने के कारण पटाखे में धमाके होने लगे। धीरे-धीरे आग की लपटें चारों तरफ दिखाई देने लगी। जिसके बाद प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची और स्थिति को संभाला। करीब तीन घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया।

क्या कहा फायर अधिकारी ने- फायर ऑफिसर इक्तार शाह ने कहा, हमें सुबह 3:55 बजे आग लगने की सूचना मिली थी। तत्काल दमकल की लगभग 10 गाड़ियां मौके पर पहुंची। आग पर काबू पा लिया गया है। उन्होंने बताया कि फतेहगढ़, बैरागढ़, गांधीनगर समेत कई फायर स्टेशनों से दमकलें मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाने की मशक्त की।
आग लगने का कारण स्पष्ट नहीं- मामले की जानकारी देते हुए अधिकारियों ने बताया कि आग किस कारण से लगी इसकी जानकारी सामने नहीं आई है। माना जा रहा है कि आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट माना जा रहा है। फिलहाल पूरे मामले की जांच की जा रही है। मामले की जांच के बाद ही खुलासा होगा कि आग किस कारण से लगी है।
गोविंदपुरा के जंगल में लगी भीषण आग, समय रहते पाया गया काबू- गोविंदपुरा क्षेत्र स्थित वार्ड क्रमांक 59 में अन्ना नगर और बुध विहार के सामने जंगल क्षेत्र में अचानक भीषण आग लगने से इलाके में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। आग की चपेट में आने से जंगल के कई पेड़-पौधों को नुकसान पहुंचा है। आग तेजी से फैलने लगी, जिससे आसपास रहने वाले लोगों में दहशत फैल गई। घटना की सूचना मिलते ही पार्षद प्रतिनिधि प्रमोद शुक्रवारे मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने तत्काल स्थानीय जनप्रतिनिधियों, बीएचएल प्रबंधन और नगर निगम की फायर ब्रिगेड को सूचना देकर मदद मांगी।
सूचना मिलने के बाद पानी के टैंकर और दमकल की व्यवस्था की गई, जिसके चलते समय रहते आग पर काबू पा लिया गया और किसी बड़े हादसे को टाल दिया गया।

बच्चों के लिए 'लिटिल रीडर्स क्लब'

4 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए कहानी, क्विज और रचनात्मक गतिविधियां होंगी, 14 जून से शुरुआत

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने और उन्हें मोबाइल स्क्रीन से दूर रखने के उद्देश्य से स्वामी विवेकानंद लाइब्रेरी, न्यू मार्केट द्वारा एक नई पहल की शुरुआत की जा रही है। 14 जून (रविवार) को यहां 'लिटिल रीडर्स क्लब' का शुभारंभ होगा, जिसमें 4 से 14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चे भाग ले सकेंगे।
लाइब्रेरी प्रबंधन के अनुसार, इस क्लब का उद्देश्य बच्चों में पठन-पाठन के प्रति रुचि जगाना, उनकी कल्पनाशक्ति को विकसित करना और उन्हें पुस्तकों की दुनिया से जोड़ना है। यह क्लब विशेष रूप से लाइब्रेरी के सदस्यों के लिए संचालित किया जाएगा।
लाइब्रेरी के प्रबंधक यतीश भटेले ने बताया कि बच्चों को उनकी उम्र के अनुसार दो समूहों में विभाजित किया गया है। 'लिटिल बड्स' (4-8 वर्ष) समूह में कहानी सुनना-सुनाना, चित्र पुस्तकों का परिचय और प्रारंभिक पठन गतिविधियां होंगी। वहीं 'पेज टर्नर्स' (9-14 वर्ष) समूह के बच्चों के लिए पुस्तक पठन के साथ संवादात्मक और रचनात्मक गतिविधियां आयोजित की जाएंगी।

कार्यक्रम विवरण

- क्लब का नाम - लिटिल रीडर्स क्लब
- आयु वर्ग - 4 से 14 वर्ष
- समय - शाम 4 बजे से
- स्थान - स्वामी विवेकानंद लाइब्रेरी, न्यू मार्केट, भोपाल

शुभारंभ कार्यक्रम 14 जून को शाम 5 बजे आयोजित होगा, जिसमें कई रोचक गतिविधियां रखी गई हैं। 'बुक जैकेट डिजाइन' के तहत बच्चे अपनी पसंदीदा पुस्तक का नया कवर तैयार करेंगे और उसका आकर्षक परिचय लिखेंगे। वहीं 'बुक पिच' गतिविधि में वे विज्ञापन विशेषज्ञ की तरह अपनी पसंदीदा किताब को प्रस्तुत करेंगे। इसके अलावा कहानी वाचन, पुस्तक चर्चा, चित्रकला एवं क्राफ्ट, शब्द और पहेली खेल, रचनात्मक लेखन, रोल प्ले, क्विज प्रतियोगिता और समूह गतिविधियां भी आयोजित होंगी। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति कौशल और टीमवर्क की भावना विकसित करने पर जोर दिया जाएगा।
भटेले ने बताया कि इस क्लब की गतिविधियां हर 15 दिनों में आयोजित की जाएंगी, ताकि बच्चों में नियमित पठन की आदत विकसित हो सके। क्लब का संचालन तूलिका श्री और अनीर्बन चक्रबर्ती द्वारा किया जाएगा, जो बचपन से ही लाइब्रेरी से जुड़े रहे हैं और पूर्व में भी कई साहित्यिक एवं रचनात्मक कार्यक्रमों का सफल संचालन कर चुके हैं।

टीईटी अनिवार्यता के खिलाफ शिक्षकों का मोर्चा

18 जून को प्रदेशभर में सौंपेंगे ज्ञापन, सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद बढ़ी चिंता

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश शिक्षक संघ ने कक्षा 1 से 8 तक पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए टीईटी अनिवार्य किए जाने के मुद्दे पर मोर्चा खोल दिया है। संघ ने साफ कहा है कि 2010 से पहले नियुक्त शिक्षकों पर बाद में बने नियम लागू करना न केवल अव्यवहारिक है, बल्कि यह प्राकृतिक न्याय और कानूनी निश्चितता के सिद्धांतों के भी विपरीत है। संघ के प्रदेशाध्यक्ष डॉ. क्षत्रवीर सिंह राठौर और प्रदेश महामंत्री राकेश गुप्ता ने बताया कि 29 मई 2026 को सुप्रीम कोर्ट के

निर्णय के बाद प्रदेश सहित देशभर के लाखों शिक्षकों में असमंजस की स्थिति बन गई है। इस फैसले के अनुसार, कक्षा 1 से 8 तक पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए टीईटी उत्तीर्ण करना आवश्यक माना गया है। इसी के विरोध में शिक्षक संघ ने 18 जून 2026 को प्रदेश के सभी जिलों में कलेक्टर के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के नाम ज्ञापन सौंपने का निर्णय लिया है।

15-20 साल से कार्यरत शिक्षकों पर संकट

संघ के अनुसार, 23 अगस्त 2010 को एनसीटीई द्वारा टीईटी को न्यूनतम अर्हता घोषित किया गया था। इसके पहले विभिन्न राज्यों में लाखों शिक्षकों की नियुक्ति उस समय लागू नियमों और चयन प्रक्रियाओं के तहत हुई थी। ये शिक्षक पिछले 15 से 20 सालों से शिक्षा, सामाजिक चेतना और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे में अब नए मानदंडों को पूर्व प्रभाव से लागू करना उनके सेवाकाल और भविष्य दोनों पर प्रतिकूल असर डाल सकता है।

संसद से समाधान की मांग

शिक्षक संघ ने केंद्र सरकार से मांग की है कि वर्ष 2010 से पूर्व नियुक्त शिक्षकों की सेवाओं को वैध मानते हुए मानसून सत्र में आवश्यक विधायी संशोधन किया जाए। साथ ही 23 अगस्त 2010 की अधिसूचना में संशोधन कर सुप्रीम कोर्ट को भी अवगत कराया जाए, ताकि लाखों शिक्षकों का भविष्य सुरक्षित किया जा सके। संघ ने कहा कि न्यायालय के निर्णय का सम्मान करते हुए भी व्यापक जनहित में नीति-निर्माण का अधिकार विधायिका के पास है और सरकार को इस दिशा में जल्द कदम उठाना चाहिए।

विवाहिता की संदिग्ध मौत, शरीर पर चोट के निशान

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार थाना क्षेत्र की बंजारा बस्ती में महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। घटना के बाद मायके पक्ष ने महिला के पति पर हत्या का आरोप लगाया है। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है। मृतका की पहचान बबीता अहिरवार (30) के रुप में हुई है।

बेटे ने नाना को दी सूचना

मृतका के पिता हरनाम सिंह ने बताया कि गुरुवार रात करीब 8 बजे उनका 7 साल का नाती समर्थ दौड़ता हुआ उनके घर पहुंचा और कहा कि पापा ने मम्मी को मार दिया है। यह सुनते ही परिवार के लोग बबीता के घर पहुंचे, जहां वह जमीन पर पड़ी मिली।
शरीर पर मिले चोट के निशान- परिजनों का कहना है कि मौके पर बबीता की चूड़ियां टूटी हुई थीं। उसके हाथ पर चोट के निशान थे, जबकि गले पर उंगलियों जैसे निशान दिखाई दे रहे थे। पिता का आरोप है कि उसकी गला दबाकर हत्या की गई है।
पति की शराब की आदत को लेकर होता था विवाद- परिजनों के अनुसार बबीता का पति सुनील अहिरवार वेल्डिंग का काम करता है और शराब पीने का आदी है। वह अक्सर शराब के नशे में घर आता था, जिसका बबीता विरोध करती थी। इसी बात को लेकर दोनों के बीच आए दिन विवाद होता था। घटना वाली रात भी पति शराब पीकर घर लौटा था और दोनों के बीच कहासुनी हुई थी।
9 साल पहले हुई थी शादी- बबीता और सुनील की शादी करीब 9 साल पहले हुई थी। उनके दो बच्चे हैं, जिनमें 7 साल का बेटा समर्थ और 4 साल की बेटी है। बबीता गृहिणी थी।
पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार- कोलार थाना प्रभारी संजय सोनी ने बताया कि महिला की मौत संदिग्ध परिस्थितियों में हुई है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए गए हैं और परिजनों सहित आसपास के लोगों से पूछताछ की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मौत के कारण स्पष्ट हो सकेंगे।
बच्चों के बयान भी होंगे अहम- पुलिस यह जानने की कोशिश कर रही है कि घटना के समय घर में क्या हुआ था। बच्चों और परिवार के अन्य सदस्यों से मिली जानकारी के आधार पर जांच को आगे बढ़ाया जा रहा है। फिलहाल पुलिस सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर मामले की जांच कर रही है।

वक्फ बोर्ड के विरोध में सड़कों पर उतरी भगवा पार्टी

एमपी नगर में रैली निकालकर बोर्ड की निकाली अर्थी जलाई

भोपाल (नप्र)। वक्फ बोर्ड के विरोध में भारतीय गण वार्ता पार्टी (भगवा पार्टी) ने शुक्रवार को राजधानी में जोरदार प्रदर्शन किया। 'वक्फ बोर्ड भारत छोड़ो' अभियान के तहत आयोजित इस विरोध प्रदर्शन में बड़ी संख्या में कार्यकर्ता शामिल हुए। बोर्ड ऑफिस चौराहे से डीबी मॉल तक रैली निकाली गई। इस दौरान वक्फ बोर्ड की सांकेतिक अर्थी निकालकर पुतला दहन किया गया और जमकर नारेबाजी हुई।
'संविधान के खिलाफ है वक्फ बोर्ड'- प्रदर्शन के दौरान पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवाकांत शुक्ला ने वक्फ बोर्ड को संविधान की मूल भावना के खिलाफ बताया। उन्होंने कहा कि देश में एक ही संविधान होना चाहिए, जो सभी नागरिकों पर समान रूप से लागू हो। उनके मुताबिक, वक्फ बोर्ड जैसी व्यवस्थाएं समानता के सिद्धांत को प्रभावित करती हैं। शुक्ला ने आरोप लगाया कि वक्फ बोर्ड को आपातकाल के दौर में स्थापित किया गया था और अब इसकी प्रासंगिकता खत्म हो चुकी है। उन्होंने राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से इसे तत्काल समाप्त करने की मांग करते हुए कहा कि देशहित में ऐसे कानूनों की समीक्षा जरूरी है।
नई पीढ़ी में खड़ा न हो जाए दूसरा पाकिस्तान- शुक्ला ने कई बार पाकिस्तान का जिक्र किया। उन्होंने आशंका जताई कि यदि वक्फ बोर्ड जैसी व्यवस्थाएं जारी रहीं तो भविष्य में देश के भीतर विभाजनकारी स्थिति पैदा हो सकती है। उन्होंने कहा कि कहीं ऐसा न हो कि आने वाली पीढ़ियों में एक नए पाकिस्तान की स्थिति बन जाए।
'वक्फ संपत्तियों को लेकर उठाए सवाल, पाकिस्तान से तुलना- शुक्ला ने दावा किया कि देश में वक्फ बोर्ड की संपत्तियां काफी बढ़ गई हैं और इसकी तुलना पाकिस्तान से करते हुए कहा कि इस पर पारदर्शिता जरूरी है। उन्होंने सवाल उठाया कि इन संपत्तियों का उपयोग किस प्रकार हो रहा है और क्या इससे आम जनता को कोई लाभ मिल रहा है।
बीजेपी पर भी साधा निशाना- इस दौरान उन्होंने बीजेपी पर भी निशाना साधते हुए कहा कि पार्टी अपनी मूल विचारधारा से भटक गई है। उन्होंने आरोप लगाया कि कथनी और करनी में अंतर दिख रहा है और इस मुद्दे पर स्पष्ट रुख सामने नहीं आ रहा।

कार्यकर्ताओं ने लगाए नारे, जनभागीदारी की अपील

प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने 'वक्फ बोर्ड भारत छोड़ो' सहित कई नारे लगाए। पार्टी ने इसे राष्ट्रव्यापी आंदोलन बताते हुए आम लोगों से भी इसमें शामिल होने की अपील की। कार्यक्रम में संगठन के पदाधिकारी और बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

संपादकीय

अब राममंदिर चढ़ावे में घपला !

अयोध्या के श्रीराम मंदिर में आने वाले चढ़ावे के हिसाब में गड़बड़ी की खबरें न केवल चिंताजनक हैं बल्कि समूचे हिंदू समाज को शर्मसार करने वाली भी है, क्योंकि सवाल तो यह उठ रहा है कि हम भगवान के काम में भी बेईमानी करने से बाज नहीं आते। आरोप है कि राम मंदिर में आने वाले चढ़ावे के हिसाब में हेराफेरी की जा रही है। दबी जुबान में यह बातें तो पहले से हवा में तैर रही थीं लेकिन सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया पर इसे डालकर देशव्यापी चर्चा और चिंता का मुददा बना दिया। उन्होंने पूछा था कि सनातन की आस्था से खिलवाड़ करने वाले ये लोग कौन हैं? अखिलेश ने चढ़ावे की गणना के सीसीटीवी फुटेज जारी करने की भी मांग की। भले ही केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने इस सवाल को यह कहकर टालने की कोशिश की यह नॉन सीरियस बात है, लेकिन गड़बड़ी के आरोप अब संत समाज और खुद भाजपा के नेता लगा रहे हैं। दरअसल, सपा सरकार में मंत्री रह चुके पवन पांडेय ने रविवार को दावा किया था कि राम मंदिर से 5 से साढ़े 7 करोड़ रुपए तक की चोरी की गई है। अखिलेश ने भी कहा था कि मामले पर सरकार की चुप्पी संदिग्ध है। कोर्ट को मामले का संज्ञान लेना चाहिए। इसी संदर्भ में भाजपा के सांसद ब्रजभूषण शरण सिंह का यह बयान महत्वपूर्ण है कि इस घपले में बड़े-बड़े लोग शामिल हैं। मैं अभी उनका नाम नहीं ले सकता। समय आने पर बताऊंगा। हालांकि राम मंदिर ट्रस्ट के महामंत्री चंपत राय ने मामले को यह कहकर दबाने की कोशिश की कि कहीं कोई गड़बड़ी नहीं है। उन्होंने कहा कि ट्रस्ट का समय-समय पर आंतरिक ऑडिट होता है। इसमें ट्रस्ट और एसबीआई बैंक के प्रतिनिधि शामिल रहते हैं। अभी तक ऐसी कोई भी बात सामने नहीं आई है। वैसे चंपतराय पर श्रीराम मंदिर के लिए भूमि अधिग्रहण के मामले में भी फर्जीवाड़ा करने के आरोप लगे थे। लेकिन उन पर कोई कार्रवाई न करते हुए उनका बचाव ही किया गया था। अब यह नया मामला सामने आ गया है। अयोध्या में भव्य राममंदिर बना है, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन इसकी व्यवस्थाओं और हिसाब किताब की प्रामाणिकता को लेकर सवाल पहले भी उठते रहे हैं। ताजा आरोप यह है कि मंदिर में आने वाले चढ़ावे में से 7 करोड़ रू. की चोरी की गई है। राम मंदिर भवन निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र ने मंगलवार को ट्रस्ट के सदस्यों के साथ बैठक की थी। राम मंदिर परिसर के एक बंद कमरे में करीब 4 घंटे तक बैठक चली। सूत्रों के मुताबिक, बैठक में चढ़ावे की राशि, उसके उपयोग और लेखा-जोखा जैसे मुद्दों पर चर्चा हुई। जाहिर है कि यह बैठक चढ़ावा चोरी के संदर्भ में ही हुई होगी। उधर प्रधानमंत्री कार्यालय ने भी आरोपों को गंभीरता से लेते हुए बुधवार को श्रीराम मंदिर ट्रस्ट से रिपोर्ट मांगी है। रिपोर्ट के बाद कार्रवाई होने की संभावना है। पिछले दिनो राम मंदिर ट्रस्ट की बैठक में बताया गया था कि चढ़ावे के रूप में अब तक ट्रस्ट को कुल 4,575 करोड़ रुपए मिले हैं। इनमें से मंदिर निर्माण कार्य पर 2,475 करोड़ रुपए खर्च किए गए। तब ट्रस्ट के पास लगभग 2100 करोड़ रुपए बचे थे। उल्लेखनीय है कि अयोध्या में राम मंदिर में रोजाना औसतन 1 करोड़ रू. से ज्यादा का दान आता है। श्रीराम जन्मभूमि के अध्यक्ष महंत कमल नयन दास ने भी कहा कि यदि कहीं कोई गड़बड़ी हुई है तो उसकी निष्पक्ष जांच अवश्य होनी चाहिए। राम मंदिर के हिसाब किताब में पूर्ण पारदर्शिता जरूरी है। क्योंकि यह करोड़ों की आस्था का प्रश्न है।

जिस बगावत से बनी टीएमसी वही उसे तोड़ेगी?

पार्टी के भीतर लंबे समय से दो अलग-अलग धाराओं की चर्चा होती रही है। एक ओर वे नेता हैं जो पार्टी के शुरुआती संघर्ष के दिनों से जुड़े रहे हैं, जबकि दूसरी ओर नई पीढ़ी के नेता हैं जो हाल के वर्षों में प्रभावशाली बने हैं। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि इन दोनों समूहों के बीच बढ़ती दूरी ने संगठनात्मक संकट को और गहरा किया है। कई वरिष्ठ नेताओं को लगता है कि पार्टी में उनकी भूमिका पहले जैसी नहीं रही, जबकि नई पीढ़ी संगठन में अधिक प्रभाव चाहती है। इस गंभीर राजनीतिक उथल-पुथल के बीच राष्ट्रीय स्तर पर ममता की पार्टी तृणमूल कांग्रेस को कांग्रेस में विलय करने का प्रस्ताव भी दिए जाने की चर्चाएं जोरों पर है। इधर मौजूदा टीएमसी बागी गुट का इरादा अलग पार्टी बनाने का नहीं है, वे खुद को असली तृणमूल करार दे रहे हैं। उनकी कोशिश पार्टी के संगठन चुनाव चिह्न और टीएमसी की पूरी राजनीतिक विरासत पर कब्जा करने की है। बागी गुट सीधे तौर पर ममता बनर्जी पर हमला नहीं कर रहा है। बागी नेताओं का कहना है कि वे अभी भी ममता बनर्जी का सम्मान करते हैं और पार्टी बनाने में उनके योगदान को मानते हैं।

नजरिया

राज कुमार सिन्हा

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

पश्चिम बंगाल की राजनीति हमेशा से तेज राजनीतिक संघर्ष और नाटकीय घटनाक्रमों के लिए जानी जाती रही है। 1998 में ममता बनर्जी ने खुद कांग्रेस से बगावत कर तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) बनाई थी। ठीक वैसे ही आज टीएमसी में विभाजन हो रहा है और विद्रोही गुट खुद को 'असली टीएमसी' बता रहा है। टीएमसी अपने 28 साल के इतिहास के सबसे बड़े आंतरिक संकट से जूझ रही है। विधानसभा चुनाव में हार के बाद पार्टी के 58 विधायकों ने बगावत कर दी है। बागी गुट ने ममता बनर्जी के बजाय ऋतब्रत बनर्जी को विधायक दल का नया नेता चुन लिया है और पार्टी में टूट का दौर जारी है। संकट उस समय और गहरा गया जब ममता बनर्जी दिल्ली में इंडिया गठबंधन की बैठक में शामिल होने आई थी और उसी दौरान टीएमसी के कई असंतुष्ट सांसद बीजेपी नेता भूपेंद्र यादव के आवास पर बैठक करते नजर आए। संकट अब संसद तक पहुंच चुका है। राज्यसभा सांसद सुखेंदु शेखर रॉय ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। खबर आई कि कम से कम 20 असंतुष्ट सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को पत्र लिखकर एनडीए में शामिल होने की इच्छा जताई है। हालांकि इस पर अंतिम निर्णय सामने नहीं आया है लेकिन इस घटनाक्रम ने पार्टी नेतृत्व की चिंता कई गुना बढ़ा दी है। टीएमसी सुप्रीमो ममता बनर्जी अपनी पार्टी को बिखरने से बचाने के लिए बागी विधायकों व सांसदों से व्यक्तिगत संपर्क साध रही हैं, लेकिन सफलता नहीं मिल रही है। पार्टी को टूटने से बचाने के लिए ममता ने संगठन में व्यापक बदलाव करते हुए अभिषेक बनर्जी के प्रभाव को सीमित किया है और पुराने, भरोसेमंद नेताओं को वापस कमान सौंपी है।

तृणमूल कांग्रेस में पिछले कुछ वर्षों के दौरान अभिषेक बनर्जी का राजनीतिक प्रभाव लगातार बढ़ा है। पार्टी के भीतर कई फैसलों में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती रही है।

पार्टी के भीतर लंबे समय से दो अलग-अलग धाराओं की चर्चा होती रही है। एक ओर वे नेता हैं जो पार्टी के शुरुआती संघर्ष के दिनों से जुड़े रहे हैं, जबकि दूसरी ओर नई पीढ़ी के नेता हैं जो हाल के वर्षों में प्रभावशाली बने हैं। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि इन दोनों समूहों के बीच बढ़ती दूरी ने संगठनात्मक संकट को और गहरा किया है। कई वरिष्ठ नेताओं को लगता है कि पार्टी में उनकी भूमिका पहले जैसी नहीं रही, जबकि नई पीढ़ी संगठन में अधिक प्रभाव चाहती है। इस गंभीर राजनीतिक उथल-पुथल के बीच राष्ट्रीय स्तर पर ममता की पार्टी

तृणमूल कांग्रेस को कांग्रेस में विलय करने का प्रस्ताव भी दिए जाने की चर्चाएं जोरों पर है। इधर मौजूदा टीएमसी बागी गुट का इरादा अलग पार्टी बनाने का नहीं है, वे खुद को असली तृणमूल करार दे रहे हैं। उनकी कोशिश पार्टी के संगठन चुनाव चिह्न और टीएमसी की पूरी राजनीतिक विरासत पर कब्जा करने की है। बागी गुट सीधे तौर पर ममता बनर्जी पर हमला नहीं कर रहा है। बागी नेताओं का कहना है कि वे अभी भी ममता बनर्जी का सम्मान करते हैं और पार्टी बनाने में उनके योगदान को मानते हैं। ऋतब्रत बनर्जी ने तो यहां तक कहा कि वे ममता बनर्जी से इस विपक्षी मोर्चे की मुख्य सलाहकार बनने का अनुरोध करेंगे। उनकी असली लड़ाई अभिषेक बनर्जी और उनके करीबी सलाहकारों के बढ़ते प्रभाव से है। बागी गुट बंगाल में एक ऐसा नया राजनीतिक स्पेस बनाना चाहता है जो न तो मौजूदा टीएमसी का ढांचा हो और न ही भाजपा हो। इस गुट ने खुद की अलग छवि बनाने का ऐलान किया है।

पिछले कुछ दिनों में जो कुछ हुआ है उसने पश्चिम बंगाल की राजनीति की दशा और दिशा बदल दी है। कभी बंगाल की राजनीति का सबसे मजबूत किला मानी जाने वाली तृणमूल कांग्रेस की ममता बनर्जी अपने अस्तित्व की सबसे कठिन परीक्षा से गुजर रही है। फिर भी टीएमसी के भीतर अभी भी एक बड़ा वर्ग ममता बनर्जी के साथ खड़ा दिखाई देता है लेकिन लगातार बढ़ती बगावत ने पार्टी के भविष्य को अनिश्चित बना दिया है। एक समय विरोधी दलों को चुनौती देने वाली तृणमूल कांग्रेस अब अपने ही संगठन को एकजुट रखने की चुनौती से जूझ रही है।

पश्चिम बंगाल की राजनीति एक निर्णायक मोड़ पर खड़ी है। जिस तृणमूल कांग्रेस ने तीन दशकों तक ममता बनर्जी के नेतृत्व में बंगाल की राजनीति को दिशा दी, आज वही पार्टी अपने इतिहास के सबसे गंभीर आंतरिक संकट का सामना कर रही है। यह संघर्ष केवल कुछ विधायकों और सांसदों की नाराजगी का मामला नहीं है, बल्कि नेतृत्व, संगठनात्मक संरचना, राजनीतिक विरासत और भविष्य की दिशा को लेकर गहरे मतभेदों का परिणाम है। बागी गुट द्वारा स्वयं को 'असली टीएमसी' घोषित करना इस संकट को और जटिल बना देता है, क्योंकि लड़ाई केवल सत्ता की नहीं बल्कि पार्टी की पहचान और विरासत की भी है। ममता बनर्जी अब उस दौर से गुजर रही हैं जहां उनकी राजनीतिक कुशलता, संगठन पर पकड़ और जनाधार की वास्तविक शक्ति की परीक्षा हो रही है। यदि वे असंतुष्ट नेताओं को साथ लाने और संगठन में विश्वास बहाल करने में सफल होती हैं तो टीएमसी इस संकट से उबर सकती है। लेकिन यदि बगावत का दायरा और बढ़ता है, तो यह केवल तृणमूल कांग्रेस ही नहीं बल्कि पूरे पश्चिम बंगाल के राजनीतिक समीकरणों को बदल सकता है। आने वाले महीनों में यह स्पष्ट होगा कि टीएमसी इस चुनौती को अवसर में बदल पाती है या बंगाल की राजनीति किसी नए अध्याय की ओर बढ़ती है। आने वाले दिनों में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि पार्टी नेतृत्व इस संकट से कैसे बाहर निकलता है और क्या संगठन दोबारा पहले जैसी मजबूती हासिल कर पाता है?

आते हैं याद ईएमएस नंबूदिरीपाद

दूरगामी फैसला

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ईएमएस... कहने को फकत तीन अक्षर, मगर इन तीन अक्षरों ने बीती सदी के छठवें दशक में विश्व इतिहास में नयी इबारत लिख दी थी। अहम बात यह है किकेरल के फलक पर लिखी यह इबारत अभी मिटी नहीं है, बल्कि उसकी चमक बरकरार है। साक्षरता के लिए ख्यात सरसब्ज केरल के लोग उस परंपरा को जिलाए हुए हैं, जिसकी नींव ईएमएस ने डाली थी।

ईएमएस यानी ईएमएस नंबूदिरीपाद। नंबूदिरीपाद यानी विश्व के प्रथम निर्वाचित कम्युनिस्ट मुख्यमंत्री और विचारक, जिनके नेतृत्व में सन् 1957 में केरल राज्य विधानसभा के चुनाव में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने राजनीतिक आकाश में जीत का परचम लहरा दिया था, जिसकी चमक को सुदूर यूएसएतक में महसूस किया गया था।

13 जून, सन् 1909 को पेरिनतालमन्ना में जनमे नंबीदिरीपाद का पूरा नाम था एलमकुलम (ई) मनक्कल (एम) शंकरन (एस) नंबूदिरीपाद। वे ईएमएस के नाम से जाने और पुकारे गये। उन्होंने केरल की राजनीति को नयी दिशा दी और आधुनिक केरल की आधारशिला रखी। मलयाली साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान के अलावा उन्होंने साम्यवादी विचारधारा को कलम से समृद्ध किया। ब्राह्मण कुल और संपन्न जमींदार परिवार में जनमे ईएमएस ने परंपरा को तिलांजलि देकर केरल में जिस परंपरा का सूत्रपात किया, वह अवरोहों-अघातों के बावजूद अभी भी अक्षुण्ण हैं। मुख्यमंत्री पिनरायी विजयन उसी मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई एम या माकपा) के निर्वाचित नेता हैं, जिसके संस्थापकों में ईएमएस प्रमुख थे। नंबूदिरीपाद के नाम में समाहित एलमकुलम वस्तुतः वह गांव है, जहां ईएमएस पैदा हुए थे। कुलीन ब्राह्मण परिवार में जनमे ईएमएस ने पांच वर्ष की वय में अपने पिता को खो दिया था। पीएम मैथ्यू के अंतरंग सखा रहे ईएमएस ने जातिप्रथा और रूढ़ियों के खिलाफ कम उम्र में ही झंड़ा उठा लिया था। वे जल्द ही उस वल्लुवनाडु योगक्षेम सभा से जुड़ गये, जो प्रगतिशील नंबूदिरी युवकों का जुझारू संगठन था। सेंट थॉमस कॉलेज, त्रिशूर से स्नातक ईएमएस कॉलेज जीवन में कांग्रेस और आजादी की लड़ाई से जुड़े। बताते हैं कि ओजस्वी वक्ता वीजे मथाई को सुनने के लिए वह मीलोंमील पैदल चलकर जाते थे। वह सन् 1934 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की समाजवादी शाखा कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापकों में एक थे और सन् 40 तक इसके निर्वाचित राष्ट्रीय सहसचिव रहे। यही वह काल था, जब सन् 1939 में वह मद्रास विधानसभा के लिए निर्वाचित हुए। समाजवादी मूल्यों और श्रमजीवी वर्ग के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के चलते वह कम्युनिस्ट आंदोलन की ओर आकृष्ट हुए और भारत में कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापकों में शुमार रहे। सरकार के कोप से बचने के लिए कुछ अर्सा भूमिगत भी रहना पड़ा।

सन् 1957 में केरल के चुनाव में नंबूदिरीपाद के नेतृत्व में कम्युनिस्टों की जीत युगांतकारी घटना थी। ईएमएस ने 5 अप्रैल को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। उनकी कामयाबी न जाने कितनों की आंखों की किरकिरी थी। विश्व इतिहास और भारत-गणराज्य का यह सर्वथा विरल प्रसंग था। उनके लाए भूमि सुधार अध्यादेश और शिक्षा अधिनियम ने केरल की दशा और दिशा बदल दी। लेकिन ईएमएस लंबी पारी नहीं खेल सके। सन् 1959 में केंद्र सरकार ने उनकी सरकार को संविधान के अनुच्छेद 356 के तहत भंग कर दिया। इस कार्रवाई की निमित्त बनी कांग्रेस की तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती इंदिरा गांधी। बताते हैं कि इस कदम को लेकर प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू पसोपेश में थे, लेकिन बेटी की जिद पिता के विवेक पर भारी पड़ी। इस अभूतपूर्व प्रसंग के सिलसिले में अमेरिकी गुप्तचर संस्था सीआईए की सक्रियता का भी जिक्र होता है। सीआईए के दस्तावेज और पूर्व अमेरिकी राजदूत एल्सवर्थ बंकर की आत्मकथा इस बात का संकेत देती है कि केरल में कम्युनिस्टों की विजय व्हाइट हाउस के लिए चिंता का विषय थी। बहरहाल, ईएमएस सन् 1960 से 64 के मध्य केरल विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रहे। उनके विचारों और सक्रियता से गठबंधन राजनीति को बल मिला। केरल में गठबंधन राजनीति का प्रयोग सफल रहा। सन् 1967 में ईएमएस पुनः मुख्यमंत्री बने, लेकिन इस बार भी वह अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर सके। उनकी सप्तकक्षी मुन्नानी (सप्तदलीय गठबंधन) सरकार, जिसमें भाकपा और मुस्लिम लीग भी थी, अंतर्विरोधों के चलते 24 अक्टूबर, 1969 को गिर गयी। इसी दशक की बड़ी घटना यह रही कि सन् 1964 में सीपीआई के विघटन पर वह सीपीएम के साथ रहे। सीपीएम में उनकी केन्द्रीय महत्ता अक्षुण्ण रही और वे मृत्युपर्यंत पार्टी के पोलित ब्यूरो के सदस्य रहे। अपने दूसरे मुख्यमंत्रित्वकाल में यंत्रीकृत कॉइर-फैक्ट्री का उद्घाटन कर उन्होंने केरल के आधुनिकीकरण को गति तो प्रदान की ही, अपने लेखों, कार्यों और परामर्श से वे केरल में सीपीएम को बल प्रदान करते रहे। उनका देहांत सन 1998 में त्रिवेंद्रम में हुआ।

ईएमएस के व्यक्तित्व के साथ एक दिलचस्प खूबी जुड़ी हुई है। बोलते हुए वे हल्का-सा हकलाते थे। एकबारगी उनसे पूछा गया,'ईएमएस आप हकलाते हैं?' ईएमएस ने सहज भाव से उत्तर दिया, 'हां, जब मैं बोलता हूं, तब...' बहरहाल, यह हकलाना उन्हें अक्सर गांभीर्य और वैशिष्ट देता था। उसने उनकी वाक-शैली को अलहदा पहचान दी। वह बहुत प्रभावी वक्ता रहे और उन्हें सुनने के लिए जनमेदिनी उमड़ा करती थी। ईएमएस राजनीतिज्ञ और विचारक के साथ-साथ पत्रकार और लोकप्रिय लेखक रहे। उनके लिखे को पढ़ा और सराहा गया। केरल के इतिहास पर उनकी किताब को प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। उनकी आत्मकथा साहित्य अकादेमी से पुरुस्कृत कृति है। अलबत्ता उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, स्वतंत्रता-संग्राम, मार्क्सवाद और कम्युनिस्ट पार्टियों पर भी किताबें लिखीं। महात्मा गांधी को 'हिन्दु-रूढ़िवादी' मानते हुए ईएमएस की 'महात्मा एण्ड द इज्म' और 'गांधीयम - गांधीसवम' जैसी कृतियां उपलब्ध हैं। उनका साहित्य 'संचिका' (रचनावली) के रूप में प्रकाशित है। ईएमएस, केसरी बालकृष्ण पिल्लै, जोसेफ मुंदासरी, एमके पाल और के. दामोदरन पुरोगमन साहित्य प्रस्थानम के आधारस्तंभ रहे। आधुनिक मलयाली साहित्य के विकास में 'रूप भद्रता विवादम्' का खासा महत्व है, जिसमें ईएमएस ने अग्रणी भूमिका निभाई। केसरी से उनका विवाद अत्यंत चर्चा का विषय रहा। ईएमएस ने केसरी को पेटी-बूर्जवा बुद्धिजीवी करार दिया और कला तथा साहित्यिक आंदोलन के प्रति कम्युनिस्ट पार्टी की धारणा के प्रति तीखा रवैया अख्तियार किया। ईएमएस जीवन के आखिरी क्षणों तक सक्रिय रहे। उन्होंने 88 की पक्की उम्र में सन् 1998 के चुनाव प्रचार में भाग लिया। इस दौरान उन्हें निमोनिया ने जकड़ लिया। उन्हें उपचार के लिए त्रिवेंद्रम के कास्मोपालिटन अस्पताल में भर्ती किया गया। वहीं 19 मार्च, 1998 को अपरान्ह तीन बजकर 40 मिनट पर उन्होंने अंतिम सांस ली। राजधानी के विद्युत शवदाह गृह में राजकीय सम्मान से उनकी अंत्येष्टि हुई। केरल ने नम आंखों से मूल्यों के प्रति समर्पित अपने संघर्षशील सपूत को अंतिम विदाई तो दी, लेकिन केरल के जनमानस में अंकित उनकी छवि आज भी उतनी ही जीवंत और चमकीली है, जितनी बरसों पहले थी। यही नहीं, उनके प्रयासों से साक्षर हुए केरल में उन्हें अत्यंत मनोयोगपूर्वक पढ़ा और याद किया जाता है।

लेखकों को क्यों इतना पसंद आता है शिमला..!

शहरनामा

संजीव शर्मा

लेखक पत्रकार हैं।

आखिर, शिमला में ऐसा क्या है कि दुनिया भर के नामी लेखक यहां खिंचे चले आते हैं? कोई यहां रहकर किताब लिखना चाहता है तो कोई यहां की वादियों पर ही शब्द चित्र उकेरने लगता है। कुछ तो ऐसा खास है देवभूमि हिमाचल प्रदेश और इसकी राजधानी में, जो हर छोटे बड़े रचनाकार को अपने मोहपाश में जकड़ लेता है। यह तो ज़ाहिर बात है कि लेखन के लिए मानसिक शांति और एकांत की आवश्यकता होती है। शिमला के घने देवदार-चीड़ के जंगल, धुंध भरी सुबह और आमतौर पर बर्फ़ से ढकी पहाड़ियों की शांति लेखकों को रचनात्मक वातावरण प्रदान करती हैं। जिससे वे बाहरी शोर से दूर होकर अपने विचारों को शब्द दे पाते हैं। शायद, यही कारण है कि निर्मल वर्मा जैसे लेखकों की रचनाओं में शिमला का शांत और सुकून भरा माहौल स्पष्ट रूप से झलकता है।

हिमालय की गोद में बसे इस शहर का प्राकृतिक सौंदर्य भी कवियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने यहाँ की वादियों से प्रभावित होकर अपनी प्रसिद्ध कविताओं की रचना की। यहां के पहाड़ों का बदलता मौसम, बर्फबारी और मनमोहक सूर्यास्त लेखकों की कल्पनाशीलता को नई उड़ान देते हैं। शिमला की एक अनूठी विशेषता यह भी है कि यह कभी भी केवल एक पहाड़ी क्षेत्र भर नहीं रहा बल्कि अंग्रेजों के प्रभाव के कारण यहाँ शुरू से ही दुनिया भर के बुद्धिजीवी, राजनेता और कलाकार आते रहे हैं। इस विविधता ने यहाँ बौद्धिक माहौल बनाया और साहित्य, नाटक और कला जैसी कलाओं को फलने फूलने का भरपूर अवसर दिया। गेयटी थिएटर जैसी विश्व स्तरीय जगहों ने भी रचनात्मक ऊर्जा को और विस्तार देने का काम किया।

इसके अलावा, ब्रिटिश काल में शिमला भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी थी। यहाँ के शीर्ष अफसरों,उनके परिवारों, नामी क्लबों और आए दिन होने वाली पार्टियों के हाई-प्रोफाइल जीवन ने भी लेखकों को औपनिवेशिक समाज के चरित्रों और किस्सों पर लिखने के लिए भरपूर मसाला दिया। शिमला में लेखन के विस्तार का एक कारण यह भी है कि अंग्रेजी सत्ता का केंद्र होने के कारण यहां पठन पाठन की सबसे अच्छी सुविधाएं एवं केंद्र बने। इसके फलस्वरूप बिशप कॉटन, सेंट एडवर्ड्स और ऑकलैंड हाउस जैसे प्रतिष्ठित स्कूलों की मौजूदगी ने बचपन से ही छात्रों में साहित्य के प्रति रुचि पैदा की। रस्किन बॉन्ड इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं, जिन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा के दौरान ही लिखना शुरू कर दिया था। वहीं, कई लेखकों के लिए शिमला उनकी यादों का हिस्सा है। यहाँ की पुरानी इमारतें, संकरी गलियाँ और ऐतिहासिक रिज एवं माल रोड लेखकों को अतीत की कहानियों की ओर ले जाते हैं। यही कारण है कि आज भी कई लेखक यहाँ के हेरिटेज होम्स में रहकर लिखना पसंद करते हैं। शिमला के सहज,शांत और सुकून भरे पर्वतीय क्षेत्रों ने भी कई विख्यात देशी विदेशी लेखकों, कवियों, कहानीकारों को आकर्षित किया है। मसलन, गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने तो शिमला के वुडफील्ड कॉटेज को अपना सेकेंड होम ही बना लिया था। यहाँ उन्होंने अपनी प्रसिद्ध काव्य कृति 'सोनार तरी' की कई कविताओं की रचना की।

मशहूर लेखक निर्मल वर्मा का तो जन्म ही शिमला में हुआ इसलिए उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'लाल टीन की छत' शिमला की सर्दियों और यहाँ के एकांत जीवन का जीवंत चित्रण करता है। उनकी कहानियों के पहले संग्रह 'परिंदे' में भी इस पहाड़ी शहर की गहरी झलक मिलती है। जाने माने लेखक रुडयार्ड किपलिंग का परिवार शिमला में गर्मियों की छुट्टियाँ बिताता था। उनकी प्रसिद्ध कहानियों का संग्रह 'प्लेन टेल्स फ्रॉम द हिल्स' पूरी तरह से शिमला और उसके आसपास की पृष्ठभूमि पर आधारित है। उन्होंने 'अंडर द देवदार्स' में भी यहाँ के औपनिवेशिक समाज का सूक्ष्म चित्रण किया है। एक अन्य लोकप्रिय लेखक रस्किन बॉन्ड ने अपनी स्कूली शिक्षा शिमला से ही पूरी की थी। उन्होंने अपनी पहली काल्पनिक रचना 'नाइन मंथ्स' इसी स्कूल के छात्रावास में रहते हुए लिखी थी। उनकी कई कहानियों में शिमला के रेलवे स्टेशन और यहाँ के बागानों के संस्मरण मिलते हैं। जानी मानी लेखिका मीनाक्षी चौधरी ने यहाँ रहकर शिमला की लोककथाओं और रहस्यों पर 'घोस्ट स्टोरीज ऑफ शिमला हिल्स' जैसी अत्यधिक लोकप्रिय पुस्तक लिखी है। लेखक राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमलाः द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासतों के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियां समेटे हुए हैं। मसलन वुडफील्ड कॉटेज गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहाँ लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंड्रिल कॉटेज को रुडयार्ड किपलिंग के कारण जाना जाता है। नॉर्थ बैंक में किपलिंग अपने परिवार के साथ रहे थे जबकि टेंड्रिल कॉटेज में भी वे अक्सर रुकते रहे हैं। भज्जी हाउस और हर्बर्ट विला लेखक निर्मल वर्मा से जुड़े हैं तो बिशप कॉटन स्कूल को रस्किन बॉन्ड से जोड़कर देखा जाता है। कुल मिलाकर देखें तो शिमला शहर के समृद्ध इतिहास और औपनिवेशिक विरासत पर 19वीं सदी से लेकर आज तक निरंतर लेखन हो रहा है। शिमला पर केंद्रितपुस्तकों की संख्या सैकड़ों में हो सकती है। इनमें सबसे ज्यादा संख्या यहां के इतिहास, विरासत,संस्कृति और भूगोल पर आधारित पुस्तकों की है। यदि अकादमिक शोध, सरकारी गजेटियर, ऐतिहासिक वृत्तांतों और आधुनिक कथा साहित्य को भी शामिल कर लिया जाए मिला तो शिमला पर केंद्रित पुस्तकों की संख्या और भी अधिक हो जाएगी।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सिर्फ कहने से नहीं फिरते हैं घूरे के दिन

व्यंग्य

सुरेश उपाध्याय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

'घूरे के दिन फिरना' एक लोकोक्ति है, जिसका अर्थ है सब दिन एक से नही होते हैं अर्थात् अच्छे दिन भी आते हैं. अच्छे दिन अपने आप आते हैं या उसके लिए कुछ जतन करने पडते हैं पर लोकोक्ति लगभग सायलेंट (खामोश) है. थोडे दिन पूर्व तक झालमुडी से मेरा परिचय नही था. पश्चिम बंगाल के चुनाव में अचानक प्रधानजी के झालमुडी खाने से वह सुर्खियो में आ गई है तथा देखते-देखते स्टार का दर्जा प्राप्त कर गई है. पश्चिम बंगाल में चुनावी जीत का श्रेय भी उसे दिया जाने लगा है, गोया बाकि सब कसरत (घोषणा पत्र, वादे, जूमले, रेवडी आदि) फिजूल थी. झालमुड़ी का जादू पश्चिम बंगाल तक ही सीमित नही रहा है, उसने देश की राजधानी दिल्ली में भी अपनी पहचान स्थापित की है. रिकार्ड तोडने के उत्सव में जगह प्राप्त कर उसने सब मिठाईयो के रिकार्ड तोड़ दिए हैं. सेव - परमल, गुड़ - चना भी इसी तरह हमारे क्षेत्र में प्रयोग में लाए जाते रहे हैं तथा विविधता भरे देश के विभिन्न हिस्सो में ऐसे और भी खाद्य पदार्थ होंगे ही. उन्हे ऐसे अवसर नही प्राप्त हुए हैं. झालमुड़ी की तरह उनके भी दिन फिरे, ऐसी कामना ही कर सकते हैं.

हाल ही में चर्चा में आए कोकरोच का उदाहरण भी हम देख सकते हैं. थोड़ी सी धमक से डरने वाला यह प्राणी अंधेरे में छोटे छीद्रो, आलमारियों, बेसिन के नीचे व पानी की टंकियों के ढक्कन तथा छत तले अपने को सुरक्षित रखता है. घृणा, वितृष्णा, नफरत से देखे जाने वाले इस जीव को कुछ लोग देखकर ही डर जाते है. कुछ पलंग व सोफे पर खड़े होकर घर के अन्य सदस्यों को पुकारने लगते हैं. कुछ बहादुर किस्म के लोग उन्हे जूतों से रौंद देते हैं तो कुछ झाड़ू - डंडों से उनका कचूमर बना देते हैं. उन्हे मारने के कुछ घरेलू उपाय भी बताए जाते हैं, लालहीट / कालाहीट जैसे स्प्रे का भी प्रयोग किया जाता है तो किसी विशेष खुशबू से आकृष्ट कर काम तमाम करने के विज्ञापन भी दिखाई दिए हैं.

न्यायेत्तर या निर्णयेत्तर किसी टिप्पणी में कोकरोच की उपमा से देश में उद्वेलन, उत्तेजन, व आक्रोश के स्वर सुनाई दे रहे थे कि अचानक विदेश से देश में कोकरच जनता पार्टी के उदय के समाचार आए. विदेश से आए इस नाम ने देश में नई सुर्खियां प्राप्त की और कॉकरोच प्रतिरोध का नया प्रतीक हो गया है. इसे लेकर नई ऊर्जा व नए विश्वास के स्वर गुंजायमान करने के प्रयास किए गए हैं. सामान्यतौर पर जनमुद्दो के प्रति मौन इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने भी इसको प्रमुखता से स्थान दिया है. संस्थापक को देश में उतरते ही गिरफ्तारी का अंदेशा था, उसे शायद देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर भरोसा नहीं था. व्यवस्था ने उसे हवाई अड्डे से पुलिस थाने लाकर उसी दिन जंतर-मंतर पर आंदोलन की अनुमति देकर उसका भ्रम तोड़ दिया है. साथ ही दुनिया में जो लोग डेमोक्रेटिक व्यवस्था के क्रम में देश को निचले पायदान पर मानते थे, उन्हे भी ठोस संदेश दिया है. कोकरोच को हिकारत भाव से देखने वाले समाज में कॉकरोच के मुखौटे, आंदोलन के प्रतीक व नाम का प्रयोग न्यू नोर्मल है. यह कोकरोच के प्रतिरोध क्षमता की परीक्षा की घडी है, कैसे उनका आंदोलन आगे बढ़ता है?, क्या स्वरुप ग्रहण करता है?, वक्त बताएगा. कुछ अनुमान / आशंकाए इसके प्रायोजित होने व सेफ्टी वाल्व की तरह उपयोग की भी है. अंधभक्ति के युग में आशंका व प्रश्न भी आवश्यक हैं.

झालमुड़ी व कॉकरोच के यह दो उदाहरण इस बात के प्रमाण भी हैं कि अच्छे दिन सिर्फ कहने से नही आते हैं, उनके लिए कुछ जतन करना पड़ते हैं. एक तरह से यह भाग्यवाद पर कर्मवाद की जीत का प्रतीक भी है. धार्मिक सुखांत कथाओं में प्राय: समवेत स्वर में कहा जाता रहा है- जैसे अलाने के दिन फिरे - वैसे फलाने के भी फिरे. आइये, हम भी समवेत स्वर में ऐसा ही कुछ दोहराए.

बहुराष्ट्रीय फूड चेन

ब्रजेश कानूनगो

लेखक स्तंभकार हैं।

स्थानीय बाजार पर असर चुनौतीपूर्ण या उत्प्रेरक ?

बेरोजगार युवाओं के संदर्भ में देखा जाए, तो यह क्षेत्र रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरा है। इन फूड चेन में बड़ी संख्या में युवाओं को वेटर, कैशियर, किचन स्टाफ, डिलीवरी कर्मी, सुपरवाइजर, मैनेजर तथा मार्केटिंग से जुड़े विभिन्न पदों पर काम मिला है। विशेषकर कॉलेज के विद्यार्थियों और कम अनुभव वाले युवाओं के लिए यह क्षेत्र शीघ्र रोजगार का अवसर प्रदान करता है। इससे अनेक युवाओं को आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में पहला कदम रखने का अवसर मिला है। इसके अतिरिक्त इन संस्थानों में कार्य करने से युवाओं में समय प्रबंधन, टीमवर्क, ग्राहक सेवा, अनुशासन और पेशेवर कार्य संस्कृति जैसी व्यावहारिक दक्षताओं का विकास होता है। कई युवाओं ने यहां अनुभव प्राप्त करने के बाद अपने स्वयं के छोटे खाद्य व्यवसाय या स्टार्टअप भी शुरू किए हैं। ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्मों के विस्तार ने इस क्षेत्र में रोजगार के अवसरों को और अधिक बढ़ाया है।

पिछले दो दशकों में भारत में बहुराष्ट्रीय फूड चेन का विस्तार अभूतपूर्व गति से हुआ है। महानगरों से शुरू हुई यह यात्रा अब छोटे शहरों और कस्बों तक पहुंच चुकी है। बहुत से लोगों का मानना है कि भारत में इनके आगमन से स्थानीय बाजार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, छोटे व्यवसायियों का धंधा मंदा पड़ा है। जबकि कुछ इसे स्थानीय बाजार को प्रतिस्पर्धा में उतरने के लिए तैयार होने और गुणवत्तापूर्ण सेवाओं के लिए उत्प्रेरक मानते हैं।

वस्तुतः मैकडॉनल्ड,केएफसी, डोमिनोज, बर्गर किंग और स्टारबक्स (McDonalds, KFC, Dominos, Burger King, Starbucks) जैसे वैश्विक ब्रांड केवल भोजन परोसने वाले प्रतिष्ठान नहीं रह गए हैं, बल्कि उन्होंने भारतीय उपभोक्ता संस्कृति, रोजगार के स्वरूप और व्यापारिक प्रतिस्पर्धा की प्रकृति को भी प्रभावित किया है। इसलिए इनके प्रभाव को केवल सकारात्मक या नकारात्मक कहना उचित नहीं होगा; यह सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का एक जटिल तथा बहुआयामी परिदृश्य है। सबसे पहले यदि स्थानीय कारोबारियों पर प्रभाव की बात करें, तो बहुराष्ट्रीय फूड चेन ने पारंपरिक ढाबों, छोटे रेस्तरां और नाश्ते की दुकानों के सामने नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। इन कंपनियों के पास विशाल पूंजी, आक्रामक विपणन रणनीतियां, आधुनिक साज-सज्जा, मानकीकृत गुणवत्ता, डिजिटल भुगतान प्रणाली और तकनीक आधारित सेवाओं का मजबूत आधार होता है। स्वाभाविक रूप से युवा और मध्यम वर्ग का एक बड़ा हिस्सा इनकी ओर आकर्षित होता है। परिणामस्वरूप अनेक छोटे भोजनालय ग्राहकों की घटती संख्या और बढ़ती प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहे हैं।

इन फूड चेन ने बाजार में प्रतिस्पर्धा की परिभाषा भी बदल दी है। पहले मोहल्लों की चाय-नाश्ते की दुकानें अपने स्थानीय स्वाद, आत्मीयता और कम कीमत के कारण लोकप्रिय थीं, लेकिन अब उपभोक्ताओं के एक वर्ग के लिए ब्रांड वैल्यू, फूड एक्सपीरियंस और एम्बिएंस भी महत्वपूर्ण कारक बन गए हैं। इसका प्रभाव भारतीय खान-पान संस्कृति पर भी दिखाई देता है। पिज्जा, बर्गर और फ्राइड चिकन जैसे पश्चिमी व्यंजनों की बढ़ती लोकप्रियता ने कई स्थानों पर पारंपरिक भारतीय व्यंजनों की मांग को प्रभावित किया है। विशेष रूप से नई पीढ़ी के खान-पान की आदतों में उल्लेखनीय बदलाव देखा जा रहा है।

हालांकि इसका दूसरा पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। बहुराष्ट्रीय फूड चेन ने भारतीय छोटे व्यापारियों को आधुनिक व्यावसायिक पद्धतियां अपनाने के लिए प्रेरित किया है। आज अनेक स्थानीय रेस्तरां स्वच्छता, आकर्षक पैकेजिंग, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन ऑर्डर, होम डिलीवरी और ग्राहक सेवा की गुणवत्ता पर पहले की अपेक्षा अधिक ध्यान दे रहे हैं। कई भारतीय ब्रांडों ने इसी प्रतिस्पर्धा से प्रेरणा लेकर अपने व्यवसाय का सफल विस्तार किया है। इस दृष्टि से प्रतिस्पर्धा ने गुणवत्ता सुधार और नवाचार को भी बढ़ावा दिया है।

यदि बेरोजगार युवाओं के संदर्भ में देखा जाए, तो यह क्षेत्र रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरा है। इन फूड चेन में बड़ी संख्या में युवाओं को वेटर, कैशियर, किचन स्टाफ, डिलीवरी कर्मी, सुपरवाइजर, मैनेजर तथा मार्केटिंग से जुड़े विभिन्न पदों पर काम मिला है। विशेषकर कॉलेज के विद्यार्थियों और कम अनुभव वाले युवाओं के लिए यह क्षेत्र शीघ्र रोजगार का अवसर प्रदान करता है। इससे अनेक युवाओं को आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में पहला कदम रखने का अवसर मिला है। इसके अतिरिक्त इन संस्थानों में कार्य करने से युवाओं में समय प्रबंधन, टीमवर्क, ग्राहक सेवा, अनुशासन और पेशेवर कार्य संस्कृति जैसी व्यावहारिक दक्षताओं का विकास होता है। कई युवाओं ने यहां अनुभव प्राप्त करने के बाद अपने स्वयं के छोटे खाद्य व्यवसाय या स्टार्टअप भी शुरू किए हैं। ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्मों के विस्तार ने इस क्षेत्र में रोजगार के अवसरों को और अधिक बढ़ाया है। फिर भी इस तस्वीर का एक दूसरा पहलू भी है। इन नौकरियों का बड़ा हिस्साअस्थायी, कम वेतन वाला और सीमित सामाजिक सुरक्षा वाला होता है। कर्मचारियों को अक्सर लंबे कार्य घंटे, प्रदर्शन आधारित दबाव और सीमित कैरियर सुरक्षा जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए यह कहना अतिश्योक्ति होगी कि बहुराष्ट्रीय फूड चेन ने भारत की बेरोजगारी समस्या का स्थायी समाधान प्रस्तुत कर दिया है। उन्होंने रोजगार के अवसर अवश्य बढ़ाए हैं, लेकिन उच्च गुणवत्ता वाले और दीर्घकालिक रोजगार की गारंटी बिल्कुल नहीं दी है।

अंततः कहा जा सकता है कि बहुराष्ट्रीय फूड चेन का भारत के स्थानीय बाजार पर प्रभाव दोधारी तलवार के समान है। एक ओर उन्होंने छोटे कारोबारियों के सामने कठिन प्रतिस्पर्धा उत्पन्न की और पारंपरिक खाद्य संस्कृति को चुनौती दी, तो दूसरी ओर आधुनिक व्यापार पद्धतियों, सेवा क्षेत्र के विस्तार और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान भी दिया। आवश्यकता इस बात की है कि सरकार, उद्योग और समाज मिलकर स्थानीय खाद्य व्यवसायों को तकनीकी, वित्तीय और विपणन संबंधी सहयोग प्रदान करें। 'वोकल फॉर लोकल' की भावना को व्यवहारिक रूप से सशक्त बनाते हुए यदि स्थानीय उद्यमों को प्रतिस्पर्धी बनाया जाए, तो वैश्वीकरण और स्थानीय अर्थव्यवस्था के बीच संतुलित एवं समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

मोदी नेतृत्व के 12 वर्ष

धर्मेन्द्र सिंह लोधी

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व

राष्ट्र निर्माण की एक युगान्तरकारी यात्रा

प्रधानमंत्री मोदी की कार्यशैली उन्हें समकालीन वैश्विक नेतृत्व में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। वे निरंतर काम करने वाले, सूक्ष्मतम विवरणों पर ध्यान देने वाले और परिणामोन्मुखी नेतृत्व के प्रतीक माने जाते हैं। उनके व्यक्तित्व में आधुनिक प्रशासनिक दक्षता और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सम्मान एक साथ परिलक्षित होते हैं। उनकी जीवन शैली, अनुशासन, निर्णय क्षमता और कार्य के प्रति उनका समर्पण युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। राष्ट्र के समक्ष उन्होंने स्वयं को 'प्रधान सेवक' के रूप में प्रस्तुत किया है, जो लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व की भावना को सशक्त बनाता है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में पिछले बारह वर्षों में भारत ने अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय परिवर्तन देखे हैं। आधारभूत संरचना का विस्तार, डिजिटल क्रांति, वित्तीय समावेशन, स्वच्छता, ग्रामीण विकास, ऊर्जा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में व्यापक प्रयास हुए हैं। सड़क, रेल, हवाई अड्डे, बंदरगाह और डिजिटल नेटवर्क जैसे क्षेत्रों में तीव्र गति से हुए विकास ने भारत की आर्थिक क्षमता को नई ऊर्जा प्रदान की है।

भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हैं, जिनके नेतृत्व से राष्ट्र निर्माण को एक नवीन दिशा मिली है और भारत ने विकास एवं प्रगति की ऊंचाइयों को स्पर्श किया है। विगत बारह वर्षों में भारत एक ऐसे ही प्रभावी नेतृत्व का अनुभव कर रहा है। यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी का नेतृत्व। मोदी जी के नेतृत्व का यह कालखंड एक ऐसे राष्ट्रीय पुनर्जागरण का अध्याय है, जिसमें आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक गौरव, राष्ट्रीय प्रगति और वैश्विक प्रतिष्ठा का अद्वितीय संगम दिखाई देता है।

श्रीमद्भगवद्गीता कहती है -

तस्मादसक्तः सततम् कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुषः।।

अर्थात् : 'आसक्ति रहित होकर निरंतर अपने कर्तव्य का पालन करने वाला पुरुष ही श्रेष्ठता प्राप्त करता है।'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी आसक्ति रहित और बिना किसी अपेक्षा के प्रधानमंत्री के रूप में विगत बारह वर्षों से राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं। मोदी जी के सार्वजनिक जीवन की सबसे बड़ी विशेषता उनकी 'राष्ट्र प्रथम' की नीति रही है। उनकी नीतियों, निर्णयों, योजनाओं और उनकी कार्यशैली में राष्ट्रहित सर्वोपरि दिखाई देता है। उन्होंने राजनीति को हमेशा राष्ट्रसेवा का माध्यम माना है और यही कारण है, कि उनका प्रत्येक कदम, उनका प्रत्येक निर्णय निरंतर भारत को सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में केंद्रित रहा है। उनका जीवन संघर्ष, अनुशासन, समर्पण और राष्ट्रवाद की प्रेरक गाथा है। अत्यंत साधारण पृष्ठभूमि से निकलकर विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का नेतृत्व करना, भारत की महान लोकतांत्रिक प्रणाली की जीवंत शक्ति का प्रमाण है।

प्रधानमंत्री मोदी की कार्यशैली उन्हें समकालीन वैश्विक नेतृत्व में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। वे निरंतर काम करने वाले, सूक्ष्मतम विवरणों पर ध्यान देने वाले और परिणामोन्मुखी नेतृत्व के प्रतीक माने जाते हैं। उनके व्यक्तित्व में आधुनिक प्रशासनिक दक्षता और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सम्मान एक साथ परिलक्षित होते हैं। उनकी जीवन शैली, अनुशासन, निर्णय क्षमता और कार्य के प्रति उनका समर्पण युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। राष्ट्र के समक्ष उन्होंने स्वयं को 'प्रधान सेवक' के रूप में प्रस्तुत किया है, जो लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व की भावना को सशक्त बनाता है।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में पिछले बारह वर्षों में भारत ने अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय परिवर्तन देखे हैं। आधारभूत संरचना का विस्तार, डिजिटल क्रांति, वित्तीय समावेशन, स्वच्छता, ग्रामीण विकास, ऊर्जा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में व्यापक प्रयास हुए हैं। सड़क, रेल, हवाई अड्डे, बंदरगाह और डिजिटल नेटवर्क जैसे क्षेत्रों में तीव्र गति से हुए विकास ने भारत की आर्थिक क्षमता को नई ऊर्जा प्रदान की है।

प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान भारत योजना, उज्ज्वला योजना, जनधन योजना, जलजीवन मिशन, स्वच्छ भारत मिशन जैसी अनेक योजनाओं के द्वारा आम आदमी के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है, और समाज की दिशा बदली है। मोदी जी के नेतृत्व में भारत की सैन्य शक्ति सशक्त हुई है, जिसका प्रमाण हम लगातार देख रहे हैं। जम्मू-कश्मीर से धारा 370 की समाप्ति राष्ट्रीय एकता की दिशा में ऐतिहासिक कदम है जो मोदी युग को एक अद्वितीय पहचान दिलाता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने 'आत्मनिर्भर भारत' को राष्ट्रीय आत्मविश्वास के अभियान के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसका उद्देश्य भारत को उत्पादन, नवाचार, कौशल और उद्यमिता के क्षेत्र में एक वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करना है।

यह दृष्टि भारतीय युवा पीढ़ी, उद्यमियों, किसानों, महिलाओं, नवप्रवर्तकों को नए अवसर प्रदान करने का प्रयास करती है। आत्मनिर्भरता का यह विचार स्वदेशी क्षमता, स्थानीय संसाधनों और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के बीच संतुलन स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत की सांस्कृतिक और सभ्यतागत विरासत के प्रति वैश्विक सम्मान बढ़ा है। उन्होंने वैश्विक मंच पर भारतीय संस्कृति, योग, आयुर्वेद, अध्यात्म और सनातन परंपराओं को व्यापक पहचान दिलाई है। इससे नई पीढ़ी में अपने सांस्कृतिक गौरव और अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति विश्वास और सम्मान की भावना विकसित हुई है। अयोध्या में भव्य राम मंदिर के निर्माण भारत में मोदी युग के सांस्कृतिक पुनरूत्थान का जीवंत उदाहरण है।

पिछले बारह वर्षों में भारत की वैश्विक उपस्थिति और प्रभाव में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की आवाज प्रभावशाली रूप से स्थापित हुई है। माननीय मोदी के नेतृत्व में आज भारत को एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में देखा जाता है।

प्रधानमंत्री मोदी एक जन-नेता और प्रेरणा-पुरुष के रूप में राष्ट्र के सामने उपस्थित हुए हैं। मोदी जी की सबसे बड़ी शक्ति जनता से उनका प्रत्यक्ष संवाद माना जाता है। वे करोड़ों भारतीयों की आकांक्षाओं, आशाओं और सपनों से स्वयं को जोड़ने का प्रयास करते हैं। उनकी 'मन की बात' हर भारतीय के हृदय में आत्मिक प्रेरणा का प्रवाह करती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व के बारह वर्ष भारतीय लोकतंत्र की एक महत्वपूर्ण यात्रा के रूप में देखे जा सकते हैं। इन बारह वर्षों में उन्होंने केवल भारत का ही नेतृत्व नहीं किया, बल्कि वैश्विक नेतृत्व और राजनीति को भी एक नई दिशा दी है। बारह वर्ष का यह कालखंड, विकास, आत्मनिर्भरता, सुशासन, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय आत्मविश्वास को सुदृढ़ करने की एक राष्ट्रीय अभिलाषा का प्रतीक है। उनका व्यक्तित्व कर्मयोग, राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और समर्पण का प्रतीक है। 'राष्ट्र सर्वोपरि' की भावना उनके सार्वजनिक जीवन की मूल प्रेरणा रही है। उनके नेतृत्व के इन बारह वर्षों का कालखंड भारत के आत्मविश्वास, आकांक्षा, लोककल्याण और नवोदय की एक अविस्मरणीय और युगान्तरकारी यात्रा है।

स्मृति शेष

आदित्य दुबे

जसपाल राणा का जाना, एक खिलाड़ी की विदाई नहीं, एक प्रेरणा का अवसान

भारत का नाम अंतरराष्ट्रीय मंचों पर रोशन किया, जब खेल सुविधाएँ सीमित थीं और खिलाड़ियों के लिए संसाधन आज की तुलना में कहीं कम थे। इसके बावजूद उन्होंने कभी परिस्थितियों को अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया। जसपाल राणा की सबसे बड़ी उपलब्धि केवल उनके द्वारा जीते गए पदक नहीं थे। उनकी वास्तविक उपलब्धि वह विश्वास था जो उन्होंने देश के युवाओं के मन में जगाया।

किसी राष्ट्र की पहचान केवल उसकी आर्थिक प्रगति या राजनीतिक उपलब्धियों से नहीं बनती, बल्कि उन व्यक्तित्वों से भी बनती है जो अपने कर्म, संघर्ष और उपलब्धियों से करोड़ों लोगों को प्रेरित करते हैं। भारतीय खेल जगत के लिए जसपाल राणा ऐसा ही एक नाम थे। उनके निधन का समाचार केवल एक महान निशानेबाज़ के जाने की खबर नहीं है, बल्कि उस प्रेरणा के खो जाने काएहसास है जिसने वर्षों तक भारतीय युवाओं को बड़े सपने देखने का साहसदिया।

आज जब हम उनके जीवन को याद करते हैं, तो हमारे सामने केवल पदकों और रिकॉर्डों की सूची नहीं आती, बल्कि एक ऐसे खिलाड़ी की छवि उभरती है जिसने अपने जुनून, अनुशासन और अथक परिश्रम से खेलों को जीवन का मिशन बना लिया। उन्होंने उस दौर में भारत का नाम अंतरराष्ट्रीय मंचों पर रोशन किया, जब खेल सुविधाएँ सीमित थीं और खिलाड़ियों के लिए संसाधन आज की तुलना में कहीं कम थे। इसके बावजूद उन्होंने कभी परिस्थितियों को अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया। जसपाल राणा की सबसे बड़ी उपलब्धि केवल उनके द्वारा जीते गए पदक नहीं थे। उनकी वास्तविक उपलब्धि वह विश्वास था जो उन्होंने देश के युवाओं के मन में जगाया। उन्होंने साबित किया कि सफलता किसी बड़े शहर, विशेष पृष्ठभूमि या सुविधाओं की मोहताज नहीं होती। यदि लक्ष्य स्पष्ट हो और संकल्प मजबूतहो, तो सीमित संसाधनों के बीच भी असाधारण उपलब्धियाँ हासिल की जा सकती हैं। आज के समय में, जब युवाओं के सामने सफलता के अनेक आकर्षक लेकिन त्वरितरास्ते प्रस्तुत किए जाते हैं, जसपाल राणा का जीवन हमें एक अलग ही संदेश देता है। उनका जीवन कहता है कि महानता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। सफलताका वास्तविक मार्ग निरंतर अभ्यास, आत्मसंयम, धैर्य और असफलताओं से सीखने की क्षमता से होकर गुजरता है। यह संदेश आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है।

एक खिलाड़ी के रूप में उन्होंने देश को गौरवान्वित किया, लेकिन एक कोच औरमार्गदर्शक के रूप में उन्होंने भारतीय खेलों को और भी बड़ी संपत्ति दी। उन्होंने नई पीढ़ी के खिलाड़ियों को केवल तकनीक ही नहीं सिखाई, बल्कि खेल भावना, समर्पण और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी का पाठ भी पढ़ाया। उनकी सोच पदकों से आगे जाकर खिलाड़ियों के व्यक्तित्व निर्माण पर केंद्रित थी। यही कारण है कि उनका प्रभाव खेल मैदानों की सीमाओं से कहीं अधिक व्यापकरहा।

हमारे समाज में अक्सर खेलों को केवल जीत और हार के नजरिए से देखा जाता है। लेकिन जसपाल राणा का जीवन हमें याद दिलाता है कि खेल चरित्र निर्माण का सबसे प्रभावी माध्यम हैं। खेल हमें संघर्ष करना सिखाते हैं, हार को स्वीकार करना सिखाते हैं, टीम भावना का महत्व बताते हैं और सबसे बढ़कर हमें अपने लक्ष्य के प्रति ईमानदार रहना सिखाते हैं। ये वही मूल्य हैंजिनकी किसी भी सफल समाज और राष्ट्र को आवश्यकता होती है।

आज जब हम उनकी स्मृति को नमन कर रहे हैं, तब यह भी आवश्यक है कि हम उनके जीवन से सीख लेने का प्रयास करें। यदि हम वास्तव में उन्हें श्रद्धांजलि देना चाहते हैं, तो हमें अपने बच्चों और युवाओं को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करना होगा। हमें ऐसे वातावरण का निर्माण करना होगा जहाँ प्रतिभा को अवसर मिले, मेहनत को सम्मान मिले और खेलों को केवल मनोरंजननहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखा जाए।

जसपाल राणा का जीवन हमें यह सिखाता है कि एक व्यक्ति का संघर्ष और समर्पण लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकता है। वे आज भले ही हमारे बीचनहीं हैं, लेकिन उनकी उपलब्धियाँ, उनके विचार और उनके द्वारा जगाई गई प्रेरणा आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव जीवित रहेगी।

कुछ लोग अपने लिए जीते हैं, कुछ अपने समय के लिए। लेकिन कुछ विरले लोग ऐसे होते हैं जो आने वाली पीढ़ियों के लिए जीते हैं। जसपाल राणा उन्हींविरले व्यक्तित्वों में से एक थे।

उनकी स्मृति को विनम्र श्रद्धांजलि।

'खिलाड़ी मैदान छोड़ सकता है,
लेकिन उसकी प्रेरणा /हैं
कभी मैदान नहीं छोड़ती।'

जसपाल राणा

- जसपाल राणा ने वर्ल्ड शूटिंग चैम्पियनशिप और एशियन गेम्स में देश के लिए गोल्ड मेडल जीते थे। देश में निशानेबाजी को लोकप्रिय बनाने में जसपाल राणा की बड़ी भूमिका मानी जाती है. मूल रूप से उत्तराखंड के उत्तरकाशी निवासी जसपाल राणा को निशानेबाजी के क्षेत्र में उनकी उत्कृष्ट सफलता के लिए साल 2002 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।
- एशियाई खेल के स्वर्ण पदक विजेता
- जन्म - 28 जून 1976 , उत्तराखण्ड
- अवसान - 12 जून 2026 (49 वर्ष)
- संतान - देवांशी राणा और युवराज सिंह राणा
- पिता - नारायण सिंह राणा
- पत्नी - रीना राणा
- ऊँचाई - 1.75 मीटर
- शिक्षा - दिल्लीः विश्वविद्यालय से

नाटक समीक्षा

सुनील सक्सेना

पल-पल में गहराता रहस्य - चेकमेट

मध्य प्रदेश की वरिष्ठ नाट्य संस्था रंगायन का जन्म आर्टिस्ट कंबाइन ग्वालियर की कोख से लगभग पचास पहले हुआ था । मेरे ज्ञान के अनुसार आर्टिस्ट कंबाइन ग्वालियर देश की पहली कला संस्कृति को समर्पित संस्था है जिसका अपना स्वयं का नाट्य गृह था। इस रंगशाला में संस्था के नाटकों के अलावा देश की नामी गिरामी नाट्य मंडलियों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं।

भोपाल में रंगायन के संस्थापक स्व भाऊ खिरवड़कर थे। रंगायन को पोसने में उनकी महती भूमिका रही है। उसके बाद उनके पुत्र प्रशांत खिरवड़कर ने भोपाल के युवा रंगकर्मियों को जुटाकर रंगायन के बैनर तले दर्जनों नाटक का प्रदेश में और देश भर में मंचन किया । दुर्भाग्य से प्रशांत खिरवड़कर को नियति ने हमसे जल्दी ही छीन लिया । उनके निधन के बाद रंगायन लम्बे समय तक खामोशी रही ।

हाल ही में सम्पन्न 22वें स्मरण हबीब रंग आलाप नाट्य महोत्सव की चौथी शाम को रंगायन की टीम अपने पूर्व में मंचित नाटक चेकमेट को लेकर पूरे जोश, ऊर्जा और उमंग के साथ मौजूद थी। वे कलाकार जो रंगायन से किशोर अवस्था में जुड़े थे, जिनको संस्था ने संवारा, तैयार किया, उनके परिपक्व अभिनय को देखने का अवसर भोपाल के रंग प्रेमियों को इस नाटक में मिला ।

सिर्फ तीन पात्रों के इस सस्पेंस थ्रिलर नाटक ने लगभग ढाई घंटे तक दर्शकों को अपनी गिरफ्त में रखा । हॉल में अंतिम दृश्य तक सन्नाटा छाया रहा जब तक कि वो रहस्य उजागर नहीं हुआ जो इस नाटक की जान है ।

योगेश सोमण इस नाटक के लेखक हैं । योगेश स्वयं भी मराठी रंगमंच के मंजे हुए अभिनेता रहे हैं । मराठी सिनेमा और टीवी का जाना पहचाना नाम हैं योगेश सोमण । मराठी में लिखे गए इस नाटक का मूल नाम 'केस नंबर 99' है। प्रशांत खिरवड़कर ने इसका हिंदी में नाट्य रूपांतरण किया और नाटक को नया नाम दिया 'चेकमेट'। नाटक की स्टोरी में किसी हिट कमर्शियल फिल्म का पूरा मसाला है । परंतु प्रशांत अपने सधे हुए निर्देशन से, नाटक के सारे अवयव इस्तेमाल करके, नाटक को फिल्म होने से बचा ले जाते हैं ।

चूंकि नाटक में सस्पेंस है इसलिए यहां कहानी को उजागर करना उन दर्शकों के हित में नहीं होगा जो भविष्य में इसका मंचन देखेंगे। बस इतना जान लीजिए कि पल-पल में शतरंज की बिसात पर शह - मात का खेल तीन पात्रों (दो पुरूष और एक महिला) के बीच चलता रहता है । दर्शक सांस बांधे बैठा रहता है ये जानने के लिए कि अब क्या होगाज आगे क्या होगा । प्रवीण महूवाले नाटक में नचिकेत की भूमिका में हैं । सत्तर वर्ष की आयु के करीब हैं प्रवीण और लगभग पचास वर्षों का रंगमंच पर अभिनय का अनुभव है उनके पास। प्ले के उन दृश्यों में जब वे मंच पर अकेले हैं, उनके लम्बे चलने वाले एकालाप में जो संवाद अदायगी है, लयकारी है, ठहराव है कमाल का है । बड़ा कठिन होता है कलाकार के लिए मंच पर अकेले खड़े होकर दर्शकों की आंख में आंख डालकर अपनी बात को पहुंचाना । प्रवीण ने अपनी अभिनय क्षमता, मेहनत और समर्पण से जो रूतबा और क़द रंगमंच में हासिल किया है, वो बेमिसाल है ।

सीआईडी अधिकारी सत्यशील की भूमिका में हैं राहुल रस्तोगी। राहुल को बरसों बाद मंच पर देखना सुखद था। पिछले सालों में राहुल रंगमंच से जरूर दूर रहे लेकिन संस्कृति, कला, संगीत के कार्यक्रमों की संरचना के काम से जुड़े रहे। कई राष्ट्रीय स्तर के महोत्सव की परिकल्पना में राहुल का योगदान रहा है जो उनकी रचनात्मकता सक्रियता का प्रमाण है । साठ पार के राहुल भी हो गए हैं । सीआईडी जांच अधिकारी के तौर-तरीके, उसके बातचीत में ठसक, रौब, गरियाना वे पूरे जोश खरोश और कुशलता से करते हैं ।

महुआ चटर्जी नचिकेत के पत्नी नंदिनी के रोल में हैं । महुआ भोपाल रंगमंच पर लगातार अपनी मौजूदगी बनाए हुए हैं । विविध भूमिकाओं में स्वयं को ढाल लेने में महुआ माहिर हैं । इस नाटक में भी वे आलादर्जे के अभिनय से स्त्री की मनोदशा को बखूबी उकेरती हैं ।

चेकमेट का भव्य सेट इस नाटक का चौथा किरदार है । जब नाटक में दो-तीन ही कलाकार हो तो सेट नाटक को बैलेंस करने में मदद करता है । कई बार ये खतरा भी बना रहता है कि सेट की भव्यता नाटक पर ही हावी हो जाती है और पात्र गौण हो जाते हैं । दर्शक नाटक से जुड़ने के बजाय बड़े सेट की आभा में ही बिंधा रहता है । चेकमेट में निर्देशन, अभिनय और मंच सज्जा इन तीनों का तालमेल प्रस्तुति को ऊंचे मयार पर ले जाता है।

अमूमन प्रशांत खिरवड़कर के नाटकों में रिअलेस्टिक सेट नहीं होते थे। वे आर्केटेक्ट थे। अपने नाटकों में पैनल, तख्त से ही काम चला लेते थे । कम से कम प्रॉपर्टीज और अधिक से अधिक माइम का उपयोग करते थे। उनका यही 'एक्स फैक्टर' उन्हें अपने समकालीन निर्देशकों अलग पहचान देता है ।

इस नाटक के सेट में बेडरूम है, ड्राइंग रूम है, किचन है, जो कहानी की मांग भी थी और जरूरी भी था । इस काम को अंजाम दिया अनूप जोशी (बंटी) ने । अनूप भारत भवन के रंगमंडल से वर्षों तक जुड़े रहे थे । बड़े-बड़े निर्देशकों के साथ काम करके सेट डिजाइन और लाइटिंग के गुर उन्होंने सीखे हैं। उनका ये हुनर, करिश्मा चेकमेट के सेट में नजर आ रहा था ।

नाटक के अंत में राहुल रस्तोगी ने टीम के परिचय के दौरान महत्वपूर्ण बात दर्शकों से कही जिसे रेखांकित करना समीचीन होगा कि हमें लोग शौकिया रंगकर्मी, अव्यावसायिक रंग संस्था कहते जरूर हैं लेकिन हमारे काम में चाहे वो अभिनय हो, संगीत हो, सेट डिजाइन हो, प्रकाश सज्जा हो, हम किसी प्रोफेशनल से कमतर नहीं है । हम पूरी शिद्दत और ईमानदारी से रंगकर्म करते हैं। उनका ये दावा पूरी प्रस्तुति के समय हर स्तर पर दिखा। दर्शकों ने दो सौ - तीन सौ रूपए के टिकिट लेकर नाटक देखा लेकिन ठगा हुआ महसूस नहीं किया। रंगायन संस्था की चौथी पीढ़ी के अनुज खिरवड़कर ने नाटक में संगीत दिया है। संगीत संचालन में उनके सहायक रहे युग खडायते इन दिनों मंच से परे की गतिविधियों में काफी सक्रिय हैं। प्रस्तुति और मंच में सहयोग दिया कबीर रस्तोगी ने। थियेटर में बैकस्टेज का काम दोयम दर्जे का माना जाता है हकीकत में ये महत्वपूर्ण काम है । इसमें सहयोग करने वाले उन सिक्कों की तरह होते हैं जिन्हें उछालने पर आवाज नहीं आती । वे अपना काम खामोशी से लाइम लाइट में आए बिना करते रहते हैं । ये सच है इनके बिना कोई भी प्रस्तुति की सफलता संदिग्ध ही बनी रहती है । रंगायान की ये संभावनाओं से भरी नई जनरेशन, इस संस्था की परम्पराओं का परचम लहराएगी और आने वाले समय में और बेहतर नाटक देखने को मिलेंगे ऐसी अपेक्षा हम कर सकते हैं । सोशल मीडिया, रील्स से हटकर अगर कुछ अच्छा देखने का दिल करे तो चेकमेट के अगले मंचन को ट्रेक करते रहे हैं । ये नाटक जरूर देखें आप निराश नहीं होंगे ये मेरा वादा है ।

मोदी जी के नेतृत्व में हो रहा जनजातीय समाज का सर्वांगीण विकास : टेकाम

जनजातीय मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष के प्रथम आगमन पर भव्य स्वागत

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी जनजातीय मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष पंकज टेकाम के प्रथम जिला प्रवास पर जनजातीय मोर्चा के नेतृत्व में भव्य स्वागत कार्यक्रम सहित महत्वपूर्ण जिला बैठक जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में आयोजित की गई। बैठक को संबोधित करते हुए मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष पंकज टेकाम ने कहा कि जनजातीय समाज के सर्वांगीण विकास का संकल्प हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी साकार कर रहे है। पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी जी ने सबसे पहले जनजातीय समाज की चिंता करते हुए हमारे गांवो को सडको से जोडने का काम किया। आजादी के बाद कांग्रेस की सरकार बनी तो नागरिकों के हितो को ध्यान नही दिया गया। तकरीबन छह दशको तक न तो हमारे गांवो मे स्कूल थे न अस्पताल जिसके लिए हमें संघर्ष करना पडता था। शिवराज जी के नेतृत्व से लेकर प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अगुवाई में आज हमारे नायको को सम्मान मिल रहा है। श्री टेकाम ने कहा कि कांग्रेस की सरकारो ने हमारी संस्कृति और शौर्य की विरासत को लगातार छिपाने का प्रयास किया आज हमारे समाज का साहस और संस्कृति पाठयक्रमो में शामिल हो रही है। बैठक को संबोधित करते केन्द्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके ने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि हमारा जन्म परम पुज्य भूमि भारत में हुआ है। इसके साथ साथ हम भाजपा के साथ कार्य कर रहे हैं यह हमारा परम सौभाग्य है। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जनजातीय समाज का विकास हो रहा है। विरासत को संजोते हुए हम गांव गली और मजरे टोले तक विकास की इबारत रच रहे है। जनजातीय मोर्चा अपने वैभवशाली इतिहास से प्रेरणा लेकर 2047 के विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए युवा तरूणाई के साथ प्रयास कर रहा है। जो निश्चित रूप से हमारे संकल्प को सिद्व करने वाला होगा। बैठक को संबोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार ने कहा कि आदिवासी समाज की चिंता अगर किसी ने की है तो वो पार्टी भारतीय जनता पार्टी है। कांग्रेस के शासन काल में आदिवासी समाज को महज वोट बैंक की तरह देखा जाता था। आज पूरे समाज के उत्थान को लेकर प्रयास दिखाई दे रहे है। भारतीय जनता पार्टी के मोर्चो में जनजातीय मोर्चा का नेतृत्व हमेशा प्रथम पंक्ति में दिखाई देता है। बैठक को संबोधित करते हुए मोर्चा के संभागीय प्रभारी एवं छिंदवाडा के महापौर विक्रम आहाके ने कहा कि मोदी जी और मोहन जी के नेतृत्व में जो जनकल्याणकारी योजनाएं चल रही हैं उनका मतदान केन्द्र तक प्रचार और प्रभाव रहे इसके प्रयास हम सबको मिलकर करना है। जल जंगल जमीन का अधिकार हमें भाजपा सरकार ने दिया है। धरती आबा योजना और प्रधानमंत्री आवास योजना हमारे समाज के लिए वरदान साबित हो रही हैं। बैठक को संबोधित करते हुए जिला महामंत्री कमलेश सिंह ने कहा कि हमारा जिला बैतूल आदिवासीयों की वीर भूमि है जिसने अंग्रेज और कांग्रेस से लडकर अपनी संस्कृति और विरासत को बरकरार रखा है। उन्होने स्वतंत्रता संग्राम और आपात काल के समय के नायको के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डाला। बैठक का संचालन जनजातीय मोर्चा के पूर्व जिलाध्यक्ष सुनील भलावी एवं अंत में आभार मोर्चा के पूर्व जिलाध्यक्ष सीताराम चढोकार ने व्यक्त किया। बैठक में जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, पूर्व जिलापंचायत अध्यक्ष सूरजलाल जावलकर, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य दिनेश परतेती, जनजातीय मोर्चा हरदा के जिलाध्यक्ष राहूल शाह , बैतूल अजजा मोर्चा जिलाध्यक्ष संतोष टेकाम मंचासीन रहे। बैठक में जनजातीय मोर्चा के जनप्रतिनिधि एवं जिला पदाधिकारी सहित बडी संख्या में उपस्थित रहे।

मेंटनेंस के कारण आज बंद रहेगी बिजली

बैतूल। बिजली कंपनी द्वारा 14 जून को 33/11 केव्ही उपकेंद्र बडोरा में मेंटेनेंस कार्य किया जाएगा। मेंटेनेंस कार्य के चलते रविवार को सुबह 8 से 11 बजे तक द्वारका नगर, आरके पुरम, शशांक नगर, कौशल्या विहार कॉलोनी, रॉयल ग्रीन सिटी, मोक्षा रेजिडेंसी बालाजी रेजिडेंसी एवं अन्य द्वारका नगर फीडर में आने वाले क्षेत्रों में विद्युत सप्लाई बंद रहेगी। मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड वितरण केंद्र बैतूल ग्रामीण के सहायक प्रबंधक ने बताया कि किन्ही अपरिहार्य कारणों से समय में परिवर्तन किया जा सकता है।

ग्राम सेमरीहरचंद में न्यायिक मजिस्ट्रेट सुश्री अपेक्षा यादव के आतिथ्य में विधिक साक्षरता शिविर सम्पन्न

सोहागपुर । समीपवर्ती ग्राम सेमरीहरचंद में मध्य प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर एवं प्रधान जिला सत्र न्यायाधीश नर्मदापुरम के निर्देशानुसार एवं अपर सत्र न्यायाधीश एवं तहसील विधिक साक्षरता अध्यक्ष श्री अतुल सक्सेना अपर सत्र न्यायाधीश सोहागपुर के आदेशानुसार ग्राम पंचायत सेमरी हरचंद में तहसील सोहागपुर मे विधिक साक्षरता शिविर न्यायिक मजिस्ट्रेट सुश्री अपेक्षा यादव न्यायिक मजिस्ट्रेट सोहागपुर के मार्ग दर्शन में आयोजन किया गया । इस अवसर पर वक्ताओं ने निशुल्क विधिक सहायता कानूनों की विस्तृत सारगर्भित जानकारी दी गई। वहीं ग्रामीणों एवं उपस्थित जनों को महिला बाल अधिकारों एवं सामाजिक न्याय के प्रावधानों को विस्तार से जानकारी दी गई।इस विधिक साक्षरता सिविर मे ग्राम पंचायत सेमरी हरचंद के सरपंच चेतन मीना उप सरपंच, पंचायत सचिव ,आंगनवाड़ी सुपरवाइजर , आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं ग्रामीण जागरूकता कार्यक्रम में उपस्थित थे।इसी अवसर न्यायिक मजिस्ट्रेट सुश्री अपेक्षा यादव ने ग्रामीणों की उत्सुकता भरे प्रश्नों पर सारगर्भित जानकारी दी गई।

व्यापारियों की एकजुटता बढ़ी, पर्चा के जरिए जनसमर्थन जुटाने की तैयारी

लल्ली चौक से पेट्रोल पंप चौराहे तक लगाये बस स्टैंड बचाओ के बोर्ड

बैतूल। कोठीबाजार स्थित प्रमुख बस स्टैंड को सदर बैल बाजार क्षेत्र में स्थानांतरित किए जाने की संभावित योजना के विरोध में व्यापारियों का हस्तक्षेप तूल पकड़ता जा रहा है। बीती रात शहर के लल्ली चौक से लेकर पेट्रोल पंप चौराहे तक बिजली पोलों पर बसस्टैंड बचाओ अभियान के बोर्ड लगाए हैं। इसके साथ व्यापारियों ने व्यापक जनसंपर्क अभियान भी शुरू कर दिया है, इससे यह मुद्धा लगातार तूल पकड़ता जा रहा है। गौरतलब है कि कोठीबाजार बसस्टैंड को सदर बैल बाजार शिफ्ट किए जाने की खबर के बाद मामले ने अचानक तूल पकड़ लिया है। लगभग 2 से 3 हजार व्यापारियों को अपना व्यवसाय ठप्प होने की चिंता सताने लगी है। तय रूपरेखा के मुताबिक बसस्टैंड शिफ्टिंग के विरोध में पर्चे छपवाए जाने हैं, जिन्हें कोठीबाजार क्षेत्र की प्रत्येक दुकान और प्रतिष्ठान तक पहुंचाया जाएगा। पर्चों के माध्यम से व्यापारियों और नागरिकों को प्रस्तावित शिफ्टिंग के संभावित प्रभावों से अवगत कराया जाएगा तथा आंदोलन के समर्थन की अपील की जाएगी। इस संबंध में कांग्रेस निकाय प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष रजनीश सोनी का कहना है कि उनकी जानकारी के अनुसार बस स्टैंड शिफ्टिंग का प्रस्ताव नपा परिषद की बैठक में रखा जाना है। कोठीबाजार बस स्टैंड वर्षों से शहर की आर्थिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा है। बसस्टैंड के कारण प्रतिदिन बड़ी संख्या में यात्री और ग्रामीण क्षेत्र के लोग बाज़ार में पहुंचते हैं, जिससे व्यापार को मजबूती मिलती है। उनका दावा है कि यदि बसस्टैंड को दूसरे स्थान पर स्थानांतरित किया तो करीब 2 से 3 हजार व्यापारियों का कारोबार गंभीर रूप से प्रभावित होगा और कई छोटे व्यापारियों के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो सकता है।

बैतूल जनपद में विभिन्न क्लस्टरों में आयोजित होंगे जनकल्याण शिविर

बैतूल। शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन एवं आमजन की समस्याओं के त्वरित निराकरण के उद्देश्य से जिले में क्लस्टर स्तर पर जनकल्याण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ग्राम पंचायत टाहली, साकादेही एवं गोराखार क्लस्टर में 12 जून से 14 जून 2026 तक जनकल्याण शिविर आयोजित किए जाएंगे। वहीं खेड़ीसांवलीगढ़, खंडारा एवं सोहागपुर क्लस्टर में 15 जून से 17 जून 2026 तक शिविर लगाए जाएंगे। इन शिविरों में विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहकर आमजन की समस्याओं का निराकरण करेंगे तथा पात्र हितग्राहियों को शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराया जाएगा।

वसंत राशिनकर स्मृति अ. भा. सम्मान घोषित

इंदौर। आपले वाचनालय एवं श्री सर्वोत्तम द्वारा उत्कृष्ट मराठी काव्य कृतियों को दिए जाने वाले वसंत राशिनकर स्मृति अखिल भारतीय सम्मानों की घोषणा कर दी गई है। संस्था सचिव संदीप राशिनकर ने बताया कि देशभर से आई काव्य संग्रहों की प्रविष्टियों में से निर्णायक मंडल ने पुणे के कवि राजन लाखे की कृति गझलायन का चयन कविवर्य वसंत राशिनकर स्मृति अ. भा. सम्मान 2025 के लिए किया है. ज्ञातव्य है की इसके पूर्व सर्वश्री रविचन्द्र हडसनकर ,दासू वैद्य ,गीतेश गजानन शिंदे, संजय चौधरी , डॉ. विशाल इंगोले , राजू देसले , डॉ. बाला साहेब लबडे , प्रताप वाघमारे एवं अविनाश सांगोलेकर इस प्रतिष्ठित सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं। उल्लेखनीय काव्य कृतियों को दिए जाने वाले वसंत राशिनकर काव्य साधना अ. भा. सम्मान 2025 के लिए बडोदे की अंजली आशुतोष मराठे की कृति सृजना , नवी मुंबई के मोहन काले की कृति अखेर मी माझीच समजूत घातली , ग्वाल्हेर के रामचंद्र किल्लेदार की कृति भाव मनातले कविता मनातल्या , बीड के बाळासाहेब नागरगोजे की कृति युद्ध पेटले आहे , नंदू मुलमुले, नांदेड की कृती अनंगवाणी , पालघर के स्वप्निल चाफेकर 'प्रीत' की कृति लेखणीने मेघ होता और इंदौर की स्मिता सराफ की कृती सांजवात... माझ्या मनात का चयन किया गया है। आपले वाचनालय राजेंद्र नगर में निकट भविष्य में होने वाले गरिमामय समारोह में ये सम्मान प्रदान किये जायेंगे ।

औचक निरीक्षण

मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हों, अनुपस्थित रेडियोग्राफर के वेतन काटने के निर्देश एसडीएम

सोहागपुर । अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी ने आज सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के (सीएचसी) का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मरीजों को उपलब्ध कराई जा रही स्वास्थ्य सेवाओं, साफ-सफाई व्यवस्था एवं कर्मचारियों की उपस्थिति का परीक्षण किया। प्रसूति वार्ड के निरीक्षण के दौरान साफ-सफाई व्यवस्था संतोषजनक नहीं पाई गई।

आपने बीएमओ डॉ रेखा गौर को तत्काल साफ-सफाई सुनिश्चित करने तथा अस्पताल परिसर में प्रतिदिन तीन बार नियमित सफाई कराने के निर्देश दिए। प्रसूति गृह के निरीक्षण के दौरान अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी ने बच्चे को उठाकर दुलार किया।इसी निरीक्षण के अवसर पर चिकित्सालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सार्थक ऐप पर दर्ज विगत 10 दिवसों की उपस्थिति का भी परीक्षण किया। आपने सभी कर्मचारियों को निर्धारित समय पर उपस्थित रहने के निर्देश दिए । चिकित्सालय परिसर के भ्रमण के अवसर पर रेडियोग्राफर कक्ष निर्धारित समय पर संचालित नहीं पाया गया तथा रेडियोग्राफर रज्जू पाल एवं अजय वास्कले अनुपस्थित पाए गए। एसडीएम ने दोनों कर्मचारियों का एक दिवस का वेतन काटे जाने हेतु बीएमओ डॉ रेखा गौर को निर्देशित किया गया। एसडीएम प्रियंका भल्लावी ने अस्पताल प्रशासन को मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने तथा समयपालन सुनिश्चित करने एवं स्वच्छता व्यवस्था बनाए रखने के निर्देश दिए। ताकि सोहागपुर ब्लाक के समस्त नागरिकों, महिलाओं को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो सके।

ब्रिक्स देशों के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि मण्डल के आगमन से जगमग हुआ मांडू, गुंजायमान हो उठी वादियां

मेहमानवाजी और स्वागत- सत्कार से डेलीगेट्स हुए अभिभूत

राजेश शर्मा, धार। ऐतिहासिक मांडू नगरी की छटा आज देखते ही बनती थी। ब्रिक्स देशों के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि मण्डल के आगमन से जहा मांडू नगरी जगमग थी तो सुमधुर संगीत की गूंज से मानों गुंजायमान हो उठी हो वादियां। मांडू का जहाज महल आज ब्रिक्स के अतिथियों के लिए बना आकर्षण का केंद्र, जहाज महल देखते ही डेलिगेट्स बोले वाव वेरी ब्यूटीफुल प्लेस आदिवासी लोक संस्कृति भगोरिया नृत्य दल ने मांदल की थाप कुराट लगाकर नाचते गाते की अगवानी की। कलेक्टर राजीव रंजन मीना, और एसपी सचिन शर्मा ने मांडू की प्राचीन खुरासानी इमली और बुके देकर आये डेलिगेट का कंकू तिलक लगाकर आत्मीय स्वागत किया। विश्व प्रसिद्ध पर्यटन नगरी माण्डू ने आज वैश्विक पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ी, जब ब्रिक्स प्रतिनिधि मण्डल के अंतर्राष्ट्रीय डेलीगेट्स यहाँ के गौरवशाली इतिहास और स्थापत्य कला से रूबरू हुए।

अतिथि देवो भव की परंपरा में शाही अंदाज में स्वागत, लोक संस्कृति की बिखरी छटा - जैसे ही ब्रिक्स देशों का अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि मण्डल माण्डू की ऐतिहासिक धरा पर स्थित 'जहाज महल' पहुँचा, पूरी नगरी 'अतिथि देवो भव' के जयघोष से गुंजायमान हो उठी। आजीविका समूह की दीदियों ने भारतीय परंपरा के अनुसार अक्षत-तिलक लगाकर और आरती उतारकर विदेशी मेहमानों का आत्मीय स्वागत किया। मुख्य द्वार पर स्थानीय कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए पारंपरिक लोक नृत्यों की ऊर्जा और थाप ने विदेशी मेहमानों को इस कदर मंत्रमुग्ध किया कि वे खुद भी कदम थिरकाने से रोक नहीं पाए।

'बाग प्रिंट' की वैश्विक गूंज,भारत के समृद्ध हस्तशिल्प और वोकल फॉर लोकल के प्रयासों की खुलकर प्रशंसा - भ्रमण के दौरान धार जिले की पहचान और विश्व प्रसिद्ध 'बाग प्रिंट' के विशेष स्टॉल्स अंतर्राष्ट्रीय मेहमानों के लिए मुख्य आकर्षण का केंद्र रहे। आजीविका समूह की दीदियों द्वारा तैयार किए गए बाग प्रिंट के वस्त्रों, डिजाइनों और इस पारंपरिक कला की बारीकियों को देखकर प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य हैरान रह गए। उन्होंने भारत के इस समृद्ध हस्तशिल्प और वोकल फॉर लोकल के प्रयासों की खुलकर प्रशंसा की।

इतिहास और संस्कृति का अद्भुत संगम सजीव अहसास और जादुई 'लाइट एंड साउंड शो' - जहाज महल की ऐतिहासिक प्राचीर पर आयोजित हुए विशेष 'लाइट एंड साउण्ड शो' ने समां बांध दिया। आधुनिक रोशनी और गूंजती ध्वनियों के माध्यम से जब माण्डू का इतिहास जीवंत हुआ, तो पूरा परिसर तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। विदेशी मेहमानों के लिए यह एक जादुई और कभी न भूलने वाला अनुभव था।

गाला डिनर में मालवा का टेस्ट रहा डिफरेंट स्वाद और सौहार्द का संगम. - मेहमानों के लिए जिला प्रशासन द्वारा एक भव्य 'गाला डिनर' का आयोजन किया गया। अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने मालवा के पारंपरिक व्यंजनों के साथ-साथ विशेष पकवानों का स्वाद लिया। भोजन की मेज पर वैश्विक सौहार्द और कूटनीतिक विमर्श की खूबसूरत तस्वीरें भी देखने को मिलीं।

खास-खास

- टूरिस्ट गाइड्स के माध्यम से डेलीगेट्स ने जहाज महल की बेजोड़ वास्तुकला, जल प्रबंधन प्रणाली और माण्डू के वैभवशाली इतिहास को जाना।
- ढलती शाम और रात बनी मुख्य आकर्षण का केंद्र ।

सुधीर देशपांडे की कृति को शरद जोशी सम्मान

भोपाल। खंडवा कवि साहित्यकार एवं व्यंग्यकार सुधीर देशपांडे की कृति 'परमसत्ता से प्रेम' को वर्ष 2024 का मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी का शरद जोशी प्रादेशिक व्यंग्य कृति सम्मान प्रदान किये जाने की घोषणा साहित्य अकादमी के संचालक डॉ. विकास दवे ने की। इस अवसर पर डॉ श्रीराम परिहार, गोविन्द गुंजन, कैलाश मंडलेकर, अरूण सातले, शैलेन्द्र शरण, गोविन्द शर्मा, रघुवीर शर्मा, श्यामसुंदर तिवारी, श्रीकांत साकल्ले, संतोष तिवारी, रश्मि दुबे, रश्मि स्थापक, माधुरी मालपानी, डॉ नीरज दीक्षित, डॉ अशोक नेगी, सुनील चौरे, दीपक चाकरे, मनोज कुलकर्णी, प्रवीण लोंढे, आनंद पेंडसे, संजय पाठक सहित बड़ी संख्या में साहित्यकारों एवं समाजजनों ने बधाई प्रेषित की है। ध्यातव्य है कि श्री देशपांडे के अब तक तीन काव्य संग्रह एक लघु निबंध संग्रह एवं एक व्यंग्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी रचनाओं का निरंतर प्रकाशन विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में हो रहा है

संक्षिप्त समाचार

जिला पंचायत सीईओ ने की जनकल्याण शिविरों की तैयारियों की समीक्षा

अधिक से अधिक हितग्राहियों को लाभान्वित करने के दिए निर्देश

सीहोर (निप्र)। जिला पंचायत सीईओ श्रीमती सर्जना यादव ने बैठक आयोजित कर जनकल्याण अभियान के अंतर्गत जिले में 12, 15 और 16 जून को आयोजित होने वाले तीन दिवसीय जनकल्याण शिविरों की तैयारियों की समीक्षा की। बैठक में शिविरों के सफल संचालन, विभागीय समन्वय तथा पात्र हितग्राहियों तक शासन की योजनाओं का लाभ पहुंचाने के संबंध में विस्तार से चर्चा की गई और आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। सीईओ श्रीमती यादव ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जनकल्याण शिविरों में अधिक से अधिक पात्र हितग्राहियों को शासन की योजनाओं से लाभान्वित किया जाए तथा योजनाओं के प्रति आमजन को जागरूक करने के लिए प्रभावी प्रचार-प्रसार भी सुनिश्चित किया जाए। बैठक में शिविरों के स्थान निर्धारण, विभागवार व्यवस्थाओं, सूचना एवं सहायता केंद्रों की स्थापना तथा प्राप्त होने वाले आवेदनों के त्वरित निराकरण सहित विभिन्न व्यवस्थाओं की समीक्षा की गई।

शिविर लगाकर किया जा रहा बिजली संबंधी समस्याओं का निराकरण

सीहोर (निप्र)। विद्युत वितरण कंपनी द्वारा उपभोक्ताओं की बिजली संबंधी शिकायतों के समाधान के लिए संपर्क अभियान चलाया जा रहा है। महाप्रबंधक श्रीमती पूनम तुमराम ने बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं के साथ सीधा संवाद कर उन्हें त्वरित सेवाएं उपलब्ध कराना और उनकी शिकायतों का त्वरित निराकरण करना है। अभियान के तहत 10 जून को आष्टा संभाग अंतर्गत ग्राम लौरासखुर्द, करमनखेड़ी, सेंधोखेड़ी, आष्टा शहर वार्ड नं. 10, बड़लिया बरामद, एवं सीहोर संभाग अंतर्गत छापरी तालिका, आमलारामजीपुरा, नयापुरा, बरखेड़ाकुर्मी, सेमलीजदीद में शिविर लगाया गया।

ग्राम चिखलपाटी में रेत के अवैध भंडारण पर 13 लाख 31 हजार 250 की अर्थदण्ड राशि की प्रस्तावित

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के निर्देशानुसार घोड़ाडोंगरी तहसील के ग्राम चिखलपाटी की भड़ंगा नदी क्षेत्र में खनिज रेत के अवैध भण्डारण के प्रकरण में खनिज विभाग ने 13 लाख 31 हजार 250 की अर्थदण्ड राशि की प्रस्तावित की है। विदित है कि 8 जून को घोड़ाडोंगरी तहसील के ग्राम चिखलपाटी की भड़ंगा नदी क्षेत्र में खनिज रेत के अवैध भण्डारण की सूचना मिलने पर अनुविभागीय अधिकारी राजस्व शाहपुर के नेतृत्व में राजस्व , पुलिस एवं खनिज अमले द्वारा संयुक्त रूप से छापामार कार्यवाही की गई थी, जिसमें अवैध भण्डारणकर्ता चंद्रकांत पिता प्रशांत मंडल, निवासी फुलबेरिया तहसील घोड़ाडोंगरी के विरूद्ध मध्यप्रदेश खनिज अवैध खनन, परिवहन तथा भण्डारण का निवारण नियम 2022 के नियम 18 (2) के तहत कार्यवाही करते हुए कुल राशि 13, 31, 250 की शास्ति प्रस्तावित कर प्रकरण न्यायालय अपर कलेक्टर बैतूल में प्रस्तुत किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि पूर्व के वर्षों में भी घोड़ाडोंगरी और शाहपुर क्षेत्र में रेत के अवैध भण्डारण पर खनिज नियमों के तहत कार्यवाही की गई है।

ग्राम स्तर पर आंखों की जांच से ग्रामवासियों को मिल रहा नजदीक के चश्मों का लाभ

▶▶ पेस्बायोपिया परियोजना के अंतर्गत की गई 2,500 लोगों की स्क्रीनिंग, 800 लाभार्थियों को मिले नि :शुल्क चश्मे

सीहोर (निप्र)। जिले में 40 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लोगों में नजदीक दृष्टि दोष (पेस्बायोपिया) की समय पर पहचान एवं उपचार करने के उद्देश्य से संचालित पेस्बायोपिया परियोजना को उल्लेखनीय सफलता मिल रही है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा यह परियोजना भैरूंदा एवं इछावर ब्लॉक में प्रारंभ की गई है। परियोजना के संचालन में विलियम जे. क्लिंटन फाउंडेशन द्वारा तकनीकी सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

परियोजना के अंतर्गत आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में पदस्थ सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा 40 वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों की नज़दीकी दृष्टि संबंधी जांच की जा रही है तथा आवश्यकता अनुसार उन्हें रीडिंग ग्लासेस (चश्मे) उपलब्ध कराए जा रहे हैं। परियोजना प्रारंभ होने के लगभग डेढ़ माह के भीतर भैरुंदा एवं इछावर विकासखंडों में करीब 2,500 लोगों की स्क्रीनिंग की जा चुकी है, जिनमें से लगभग 800 लाभार्थियों को नि:शुल्क चश्मे वितरित किए गए हैं। इससे लाभार्थियों को पढ़ने-लिखने एवं दैनिक कार्यों में काफी सुविधा प्राप्त हुई है।

परियोजना के सकारात्मक परिणामों को देखते हुए अब इसका विस्तार जिले के बुधनी, आष्टा एवं श्यामपुर विकासखंडों में भी किये जाने की योजना है। विस्तार के बाद जिले के पांचों विकासखंडों में 40 वर्ष से अधिक आयु के लोगों को उनके निकटतम आयुष्मान आरोग्य मंदिर पर निशुल्क दृष्टि जांच एवं आवश्यकतानुसार चश्मा उपलब्ध कराया जाएगा।

इस परियोजना के विस्तार से अधिक से अधिक लोगों को समय पर दृष्टि सुधार सेवाओं का लाभ मिलेगा तथा उनकी कार्यक्षमता एवं जीवन गुणवत्ता में सुधार होगा।

■ रिकॉर्ड प्रबंधन को और अधिक व्यवस्थित एवं पारदर्शी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए

अंशुल गुप्ता ने डीईओ कार्यालय का औचक निरीक्षण कर रिकॉर्ड प्रबंधन के निर्देश दिए

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने आज बुधवार को जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) कार्यालय का औचक निरीक्षण कर कार्यालयीन व्यवस्थाओं, रिकॉर्ड संधारण तथा विभिन्न शाखाओं के कार्यों का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने रिकॉर्ड प्रबंधन को और अधिक व्यवस्थित एवं पारदर्शी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कार्यालय में रखे अभिलेखों, पंजीयों तथा अन्य दस्तावेजों का अवलोकन करते हुए निर्देशित किया कि सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के पदनाम तथा उनके द्वारा संपादित किए जाने वाले कार्यों की सूची कार्यालय में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित की जाए।

उन्होंने कार्यालय में रखी सभी अलमारियों की दो-दो चाबियां तैयार कराने के निर्देश भी दिए, ताकि आवश्यकता पड़ने पर अभिलेखों तक आसानी से पहुंच बनाकर कार्यों का सुचारु संचालन किया जा सके। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने कहा कि प्रत्येक फाइल पर उसका विषय एवं संबंधित वर्ष अंकित होना अनिवार्य है।

उन्होंने सभी फाइलों का अलग-अलग रजिस्टर तैयार करने तथा प्रतिवर्ष के रिकॉर्ड को व्यवस्थित रूप से सुरक्षित रखने के निर्देश दिए। चाहे मामला साइकिल वितरण का हो, पुस्तक वितरण का अथवा अन्य योजनाओं का, प्रत्येक रिकॉर्ड का समुचित संधारण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। उन्होंने सभी अभिलेखों की लाइन लिस्टिंग तैयार करने पर भी जोर दिया। कलेक्टर ने पुराने रिकॉर्ड के नियमानुसार विनिष्टीकरण तथा अनुपयोगी एवं क्षतिग्रस्त सामग्री की नीलामी की प्रक्रिया प्रारंभ करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने स्थापना कक्ष, अनुदान शाखा एवं मान्यता शाखा का भी अवलोकन किया। साथ ही कार्यालय में पदस्थ भृत्य को निर्धारित यूनिफॉर्म में उपस्थित रहने के निर्देश दिए। मुख्य लिपिक से आवक-जावक डाक व्यवस्था की जानकारी लेते हुए कलेक्टर ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि आवश्यक सूचनाएं पारंपरिक डाक के बजाय ई-मेल के माध्यम से प्राप्त की जाएं , जिससे कार्यों में गति और पारदर्शिता बनी रहे। इस दौरान कार्यालय में स्कूल शिक्षा विभाग का सिटीजन चार्टर सुव्यवस्थित रूप से प्रदर्शित पाए जाने पर उन्होंने अधिकारियों की सराहना भी की।

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री गुप्ता ने डीईओ कार्यालय में संचालित आधार केंद्र का भी निरीक्षण किया। उन्होंने वहां प्रदर्शित रेट लिस्ट की जांच की तथा निर्देश दिए कि जिले के सभी बीआरसी कार्यालयों में आधार केंद्र स्थापित किए जाएं और वहां निर्धारित शुल्क सूची अनिवार्य रूप से प्रदर्शित की जाए। उन्होंने कहा कि इससे आधार संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए नागरिकों को स्थानीय स्तर पर बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी।

कलेक्टर ने राजस्व, गिरदावरी और सीएम हेल्पलाईन निराकरण की समीक्षा कर दिए निर्देश

रायसेन (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बुधवार को आयोजित बैठक में कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा ने राजस्व प्रकरणों, फार्मर रजिस्ट्री, गिरदावरी, सीएम हेल्पलाईन सहित अन्य कार्यो की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने राजस्व प्रकरणों की समीक्षा करते हुए सभी एसडीएम और तहसीलदारों को नामांतरण, सीमांकन, बंटवारा सहित अन्य राजस्व प्रकरणों का प्राथमिकता से निराकरण कराने के निर्देश देते हुए कहा कि आगामी 15 दिवस में 80 प्रतिशत राजस्व प्रकरणों का निराकरण कराएं। इसी प्रकार गिरदावरी कार्य की तहसीलवार समीक्षा करते हुए कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने सभी तहसीलदारों को आगामी तीन दिवस में गिरदावरी कार्य पूर्ण कराने के निर्देश दिए। साथ ही एसडीएम को प्रतिदिन की प्रगति की मॉनीटरिंग के निर्देश दिए। उन्होंने लोक सेवा गारंटी अधिनियम के तहत प्राप्त होने वाले आवेदनों के निराकरण की भी समीक्षा करते हुए अंतिम समयावधि के पहले ही उनका निराकरण कराने के निर्देश दिए। इसी प्रकार सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण की भी समीक्षा कर दिशा-निर्देश दिए। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने सभी एसडीएम को नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में सबल योजना के लंबित आवेदनों, निकायों की सीएम हेल्पलाईन निराकरण की मॉनीटरिंग, प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजना में श्रमिकों का पंजीयन कराने और पीएम आवास के सत्यापन कार्य की नियमित समीक्षा करने के निर्देश दिए। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में अपर कलेक्टर श्री मनोज उपध्याय तथा संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। विकासखण्डों से एसडीएम, तहसीलदार तथा सीएमओ वीडियो कॉफ्रेंस के माध्यम से बैठक में उपस्थित रहे।

नगर पालिका, पंचायत की फोटो युक्त मतदाता सूची के वार्षिक पुनरीक्षण कार्य की प्रगति की प्रेक्षक श्री सिंह ने की समीक्षा

बैतूल (निप्र)। स्थानीय निकाय निर्वाचन की तैयारियों के तहत नगर पालिका एवं पंचायतों की फोटोयुक्त मतदाता सूची के वार्षिक पुनरीक्षण-2026 कार्य की समीक्षा बुधवार को कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में आयोजित बैठक में की गई। बैठक में प्रेक्षक श्री शशि भूषण सिंह सेवानिवृत्ति आईएस ने जिले की नगरीय एवं ग्रामीण निकायों में चल रहे मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य की प्रगति का विस्तार से जायजा लिया। समीक्षा के दौरान संबंधित अधिकारियों ने निकायवार पुनरीक्षण कार्य प्रगति की वर्तमान स्थिति से अवगत कराया। प्रेक्षक श्री सिंह ने निकायवार वार्डों की संख्या , कुल मतदाताओं की स्थिति, नवमतदाताओं के पंजीयन, नाम विलोपन, संशोधन तथा प्राप्त दावे-आपत्तियों के निराकरण की जानकारी अधिकारियों से प्राप्त की। उन्होंने पुनरीक्षण कार्य को निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण करने तथा मतदाता सूची को त्रुटिरहित एवं अद्यतन बनाने के निर्देश दिए। बैठक में उन्होंने दावे एवं आपत्तियों के लंबित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को पारदर्शिता एवं निष्पक्षता के साथ उनका समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची निर्वाचन प्रक्रिया की आधारशिला है, इसलिए प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम सूची में शामिल होना तथा अपात्र नामों का नियमानुसार विलोपन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को फील्ड पर रहने के भी निर्देश दिए। बैठक में अपर कलेक्टर श्रीमती वंदना जाट, उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री मकसूद अहमद, एसडीएम, तहसीलदार, सहायक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, जनपद सीईओ उपस्थित थे।

● परीक्षा परिणाम में भी एतिहासिक उपलब्धि, वर्ष 2022 में 12 वीं का परिणाम था 92 प्रतिशत, अब हुआ 98 प्रतिशत, वर्ष 2022-23 में जहां थे केवल 646 विद्यार्थी, अब हो गए 1460

संदीपनी विद्यालय शाहगंज - जहां आधुनिक शिक्षा, भारतीय संस्कार और उत्कृष्ट परिणामों का हो रहा संगम

सीहोर (निप्र)। प्रदेश सरकार द्वारा स्थापित संदीपनी विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में एक अभिनव और दूरदर्शी पहल के रूप में उभरे हैं। इन विद्यालयों का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को पाठ्य ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि उनमें जीवन मूल्यों, भारतीय संस्कृति, नेतृत्व क्षमता और आधुनिक कौशलों का विकास करना भी है। इसी कड़ी में सीहोर जिले का संदीपनी विद्यालय शाहगंज आज ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का एक प्रेरणादायी केंद्र बन चुका है। विद्यालय का मूल उद्देश्य उत्कृष्ट शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों में मजबूत जीवन मूल्यों और भारतीय संस्कारों का समावेश करना है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों का सकारात्मक प्रभाव अब जमीनी स्तर पर स्पष्ट दिखाई देने लगा है। संदीपनी विद्यालय शाहगंज इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जहां आधुनिक अधोसंरचना, डिजिटल शिक्षण संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षकों और विद्यार्थी-केंद्रित गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा को नए आयाम दिए जा रहे हैं। विद्यालय में विद्यार्थियों को अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। यहां डिजिटल एवं स्मार्ट कक्षाएं, आरामदायक फर्नीचर, जूनियर साइंस लैब, जीव विज्ञान, भौतिकी, रसायन, स्टेम तथा वोकेशनल लैब, संगीत कक्ष, जूनियर एवं सीनियर कंप्यूटर लैब, पुस्तकालय, गणित प्रयोगशाला, कला कक्ष, चिकित्सा कक्ष, खेल कक्ष, बहुउद्देशीय कक्ष तथा मीटिंग हॉल जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं। इन संसाधनों के माध्यम से विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं बल्कि व्यवहारिक और तकनीकी दक्षता भी प्रदान की जा रही है। विद्यालय की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां शिक्षा को केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं रखा गया है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए परियोजना आधारित शिक्षण, गतिविधि आधारित शिक्षण, खेल-खेल में शिक्षा तथा 21वीं सदी के कौशलों पर आधारित शिक्षण पद्धतियों को अपनाया गया है। साथ ही कंप्यूटर शिक्षा, खेल गतिविधियां, शैक्षणिक भ्रमण, सांस्कृतिक कार्यक्रम, स्काउट-गाइड, इको क्लब, एनसीसी और एनएसएस जैसी गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का बहुआयामी विकास सुनिश्चित किया जा रहा है। विद्यालय की बढ़ती लोकप्रियता और गुणवत्ता का प्रमाण यहां लगातार बढ़ती छात्र संख्या है। वर्ष 2022-23 में जहां विद्यालय में 646 विद्यार्थी अध्ययनरत थे, वहीं वर्ष 2023-24 में यह संख्या बढ़कर 875 हो गई। वर्ष 2024-25 में 1375 तथा वर्ष 2025-26 में 1460 विद्यार्थियों का नामांकन दर्ज किया गया। यह निरंतर बढ़ता विश्वास दर्शाता है कि अभिभावक अब सरकारी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता को स्वीकार कर रहे हैं और अपने बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए संदीपनी विद्यालयों को प्राथमिकता दे रहे हैं।

● योजना से ऋण प्राप्त कर सचिन विनेखिया बने सफल व्यवसायी, दो युवाओं को भी दिया रोजगार

संत रविदास स्वरोजगार योजना बनी युवाओं के सपनों का आधार

नर्मदापुरम (निप्र)। मध्यप्रदेश शासन द्वारा अनुसूचित जाति वर्ग के शिक्षित बेरोजगार युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने हेतु विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं। इन्हीं योजनाओं में शामिल संत रविदास स्वरोजगार योजना आज युवाओं के लिए रोजगार का सशक्त माध्यम बन रही है। म.प्र. राज्य सहकारी अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम मर्यादित भोपाल के मार्गदर्शन में जिला स्तर पर जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति मर्यादित, नर्मदापुरम द्वारा यह योजना संचालित की जा रही है। योजना के अंतर्गत आवेदन प्रक्रिया समस्त पोर्टल के माध्यम से की जाती है।

इसी योजना का लाभ लेकर इटारसी निवासी श्री सचिन विनेखिया ने स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर सफलता की नई मिसाल पेश की है। श्री सचिन विनेखिया पिता श्री रमेश विनेखिया एवं माता श्रीमती राजकुमारी विनेखिया निवासी रामनगर न्यूयार्ड इटारसी, जिला नर्मदापुरम के रहने वाले हैं। उन्होंने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की है। नौकरी की तलाश के दौरान उन्होंने स्वयं का रोजगार प्रारंभ करने का निर्णय लिया। वर्ष 2025-26 में श्री सचिन विनेखिया ने जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति कार्यालय में संपर्क कर संत रविदास स्वरोजगार योजना की जानकारी प्राप्त की। कार्यालय द्वारा उन्हें पात्रता, आवेदन प्रक्रिया एवं आवश्यक दस्तावेजों संबंधी जानकारी दी गई। इसके बाद उन्होंने आवश्यक दस्तावेज तैयार कर ऑनलाइन आवेदन प्रस्तुत किया। आवेदन पत्र एवं दस्तावेजों की जांच उपरांत उनका प्रकरण बैंक ऑफ इंडिया शाखा इटारसी को प्रेषित किया गया।ैंक द्वारा आवेदन एवं दस्तावेजों की जांच के बाद श्री सचिन विनेखिया को 4 लाख रुपये का ऋण स्वीकृत कर वितरित किया गया। ऋण प्राप्त होने के पश्चात उन्होंने रेडीमेड कपड़ों का व्यवसाय प्रारंभ किया। उन्होंने अपने व्यवसाय में जींस, टी-शर्ट, पेंट-शर्ट, लोअर, कैपरी सहित विभिन्न प्रकार के रेडीमेड वस्त्र रखकर स्थानीय बाजारों एवं आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में स्टॉल लगाकर विक्रय कार्य शुरू किया। धीरे-धीरे उनके व्यवसाय में उन्नति होने लगी और वे नियमित आय अर्जित कर अपने परिवार का बेहतर तरीके से भरण-पोषण करने लगे।

बुजुर्ग पिता को इंसाफ दिलाकर कलेक्टर ने दिलवाया स्वयं के मकान का कब्जा

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा की संवेदनशीलता के कारण एक 70 वर्षीय बुजुर्ग पिता को उनके स्वयं के मकान का पुनः कब्जा प्राप्त हुआ। प्रशासन की त्वरित एवं प्रभावी कार्रवाई से वर्षों से परेशान वृद्ध दम्पत्ति को राहत मिली है। प्राप्त जानकारी के अनुसार नगर इटारसी स्थित हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी निवासी श्री सत्यनारायण सोनी आत्मज श्री रामगोपाल सोनी ने अपनी स्वयं की आय से भूखंड क्रय कर मकान का निर्माण कराया था। उन्होंने मकान के एक हिस्से में रहने के लिए अपने पुत्र अनिल सोनी एवं पुत्रवधु सविता सोनी को रहने की अनुमति दी थी। समय बीतने के साथ पुत्र एवं पुत्रवधु द्वारा वृद्ध दम्पत्ति को ही मकान से बेदखल कर दिया गया। परेशान होकर बुजुर्ग दम्पत्ति ने माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम 2007 के अंतर्गत एसडीएम इटारसी न्यायालय में आवेदन प्रस्तुत किया।

प्रकरण में एसडीएम न्यायालय से संतोषजनक न्याय नहीं मिलने पर बुजुर्ग दम्पत्ति ने कलेक्टर न्यायालय में अपील प्रस्तुत की। मामले की सुनवाई उपरांत कलेक्टर न्यायालय द्वारा 70 वर्षीय श्री सत्यनारायण सोनी के पक्ष में आदेश पारित करते हुए एसडीएम इटारसी को निर्देशित किया गया कि अनिल सोनी एवं उनके परिवार को मकान से बेदखल कर वृद्ध दम्पत्ति को मकान का कब्जा दिलाया जाए। इसके बावजूद आदेश का पालन नहीं होने पर श्री सत्यनारायण सोनी एवं उनकी पत्नी ने पुनः कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा के समक्ष आवेदन प्रस्तुत कर अपनी समस्या से अवगत कराया।

राइट क्लिक

टीएमसी का कांग्रेस में विलीनीकरण या आत्म तर्पण?

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में करारी मात खाने और उसके बाद तार-तार हो रही ममता बैनर्जी की तृणमूल कांग्रेस पार्टी के अब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में संभावित विलय की चर्चाएं जोरों पर हैं। यह विलय कैसे, कब और किन शर्तों पर होगा, होगा भी या नहीं, यह टीएमसी का आईएनसी में विलीनीकरण होगा या फिर आत्म तर्पण होगा, इन सब सवालों के जवाब देर-सवेर मिलेंगे। लेकिन भारत की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से लोगों का टूटकर नई पार्टी बनाने और कुछ समय तक जन समर्थन के सागर में हाथ-पैर मारने की नाकाम अथवा आंशिक सफल कोशिशों के बाद वापस अपनी मूलगंगा में तिरोहित हो जाने का इतिहास बहुत पुराना है। 1885 में अपनी स्थापना से लेकर 2026 तक 63 बार कांग्रेस से अलग होकर इसके नेताओं ने अपनी नई पार्टियां बनाई। इनमें से भी केवल 8 पार्टियां अपने दम पर अथवा किसी गठबंधन के साथ सत्ता के सिंहासन तक पहुंचीं और कुल 13 पार्टियां किसी तरह अपना वजूद बचाए हुए हैं। बाकी काल के गाल में समा गईं। इनमें से भी अलग बनी केरल कांग्रेस के भी कई टुकड़े हो चुके हैं, जबकि कुछ ने भाजपा अथवा लेफ्ट का दामन थाम लिया। ऐसे में पश्चिम बंगाल में लगातार 15 साल तक सत्ता में रही तृणमूल कांग्रेस का भा.रा. कांग्रेस में विलीन होने पर क्या हश्र होगा, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। इस विलीनीकरण कथा का अंत जानते हुए भी यदि ममता बैनर्जी कोलकाता में अपनी पार्टी को बिखरने से बचाने के उपाय करने की जगह दिल्ली में रूककर अपने पुराने घर कांग्रेस में वापसी की गुहार लगा रही हैं तो इसी से समझा जा सकता है कि कभी दबंग नेत्री कहलाने और कांग्रेस को ठेंगे पर रखने वाली ममता बैनर्जी की मानसिक दशा क्या है। घर में लगी आग को बुझाने के बजाए वो दिल्ली में भाजपा का घर राख करने का शेखचिल्ली सपना देख रही हैं।

दिलचस्प बात यह है कि राष्ट्रीय मुख्यधारा की पार्टी कांग्रेस से अलग होकर नया दल बनाने और नाकाम होने के बाद घर वापसी की मजबूरी के पीछे भी नेताओं की अपना वजूद बचाने की जद्दोजहद ही मुख्य कारण रही है। बतौर ममता बैनर्जी को ही लें तो 1998 में उन्होंने अपना राजनीतिक वजूद चमकाने के लिए कांग्रेस से अलग होकर तृणमूल कांग्रेस बनाई और सियासी दृष्टि से वो सफल भी रहीं। लेकिन हाल के चुनावों में करारी पराजय के बाद वो खुद इतनी असहाय महसूस करने लगीं कि उन्हें लगने लगा कि कांग्रेस की छत ही उनकी राजनीतिक लाज बचा पाएगी। यह हताशा जनित प्रतिशोध का विरल उदाहरण है।

यूं भी कांग्रेस से अलग होने के पीछे नेताओं की राजनीतिक महत्वाकांक्षा ही प्रेरक तत्व रही है। जब इन नेताओं को लगने लगता है कि वो अजेय प्रादेशिक क्षत्रप हैं और राष्ट्रीय पार्टी का छत्र छोड़कर खुद अपनी सल्तनत कायम कर सकते हैं तो वे अपनी निजी महत्वाकांक्षाओं में क्षेत्रीय अस्मिता, स्थानीय मुद्दों और जनाकांक्षा का तड़का लगाकर अपनी सूबाई फौज तैयार करते हैं, जो मुख्यतः व्यक्ति निष्ठा और सत्ता स्वार्थ में पगी होती है। इनका अपना कोई अलग वैचारिक आधार या आग्रह नहीं होता। ऐसी पार्टियों में व्यक्ति का चमत्कार ही मुख्य कारक होता है। जैसे ही सम्बन्धित नेता का जादू खत्म होता है, पार्टी धड़ाम से जमीन पर आ जाती है। सत्ता की सलाइन हटते ही पार्टी में बिखराव शुरू हो जाता है। ऐसे में ममता टाइप नेताओं को लगने लगता है कि अब उसी उद्गम स्थल पर फिर से राजनीतिक आचमन करना चाहिए, जहां से ये सफर शुरू हुआ था।

राजनीतिक हल्कों में चर्चा यह भी है कि बंगाल चुनाव नतीजों के बाद कांग्रेस की ओर से दबी जुबान में विलीनीकरण का ऑफर मूल पार्टी से अलग हुई वायएसआर कांग्रेस, एनसीपी (शरद पवार) को भी दिया गया है। लेकिन ये वापस कांग्रेस में शायद ही लौटें। इसका मूल कारण भी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा ही है। अलग पार्टी बनाने और उसे सत्ता में विराजित करने के बाद कांग्रेस से विलगित नेता खुद को निरंकुश सूबेदार मानने लगते हैं क्योंकि सत्ता का असली स्वाद भी इसी निरंकुशता में है। ऐसे में किसी 'बादशाह' के अधीन काम करना उनकी फितरत में नहीं बैठता। शरद पवार व्हील चेयर पर चलने के बाद भी यह माहौल बनाए रखते हैं कि उनमें अभी भी खम ठोंकने का दम है। लिहाजा कभी वो भाजपा तो कभी कांग्रेस को खुश करने वाले बयान देते रहते हैं। राजनीति में सत्ता ही अंतिम लक्ष्य होती है। सत्ताविहीन सियासी दल विपक्ष की भूमिका निभाते जरूर हैं, लेकिन कई बार उसका महत्व राजनीतिक मनोरंजन से ज्यादा नहीं होता। जहां तक विभाजन की बात है तो खुद कांग्रेस भी दो बार विभाजित हो चुकी है। और तो और कांग्रेस के प्रेरणा स्रोत महात्मा गांधी ने भी 1934 में पार्टी की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया था।

बहरहाल, कांग्रेस से अलग हुई 13 पार्टियों में से कुछ पूरी तरह सक्रिय हैं तो कुछ बराए नाम हैं। मसलन हिंदू महासभा (जिसे कांग्रेस से अलग होकर पं.मदन मोहन मालवीय ने 1915 में बनाया था), ऑल इंडिया फारवर्ड ब्लॉक (नेताजी सुभाषचंद्र बोस द्वारा कांग्रेस से अलग होकर बनाई गई यह पार्टी लंबे समय तक पश्चिम बंगाल में लेफ्टर के साथ सत्ता में भागीदार रही। संभव है कि बंगाल में बदली राजनीतिक परिस्थितियों के चलते वो भाजपा के साथ आ जाए, क्योंकि भाजपा भी नेताजी को भी अपना नेता मानती है)। इनके अलावा अ.भा. तृणमूल कांग्रेस, राष्ट्रवादी कांग्रेस (शरद पवार), केरल कांग्रेस, तमिल मनीला कांग्रेस, जम्मू कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी, विदर्भ जनता कांग्रेस, नागालैंड पीपुल्स फ्रंट (नागालैंड में एनडीए के साथ सत्ता में), अ.भा. एन. आर कांग्रेस (यह पुदुच्चेरी में एनडीए के साथ सत्ता में), छत्तीसगढ़ जनता कांग्रेस तथा लोकतांत्रिक प्रगतिशील आजाद पार्टी। यह कांग्रेस से अलग हुई नवीनतम पार्टी है, जिसे पूर्व कांग्रेस नेता गुलाम नबी आजाद ने 2022 में बनाया था। विगत 131 सालों में कांग्रेस से अलग होकर बनी बाकी 54 पार्टियों का आज कोई नामो निशान नहीं है। बाकी 9 में से भी 3 पर कांग्रेस की नजर इसलिए है, क्योंकि इनके पास कैडर और जनप्रतिनिधि हैं, जो कांग्रेस संसद और विधानसभाओं में कांग्रेस की ताकत में इजाफा कर सकते हैं। मसलन आंध्र प्रदेश की वायएसआर कांग्रेस के पास 4 लोस, 4 रास सांसद और 11 विधायक हैं, जबकि राष्ट्रवादी शरद पवार के पास क्रमशः 8 लोस, 1 रास सदस्य तथा 3 विधायक हैं। इसी तरह तृणमूल कांग्रेस में विभाजन के बाद भी ममता बैनर्जी (और एक टूट न हुई तो) 9 लोस, रास 9 तथा 22 विधायक बाकी हैं। ये सब अगर कांग्रेस में मर्ज हो जाएं तो कांग्रेस की ताकत लोस में 21 तथा रास में 13 सांसदों एवं विधानसभाओं में कुल 29 विधायकों के रूप में बढ़ सकती है। इससे कांग्रेस कार्यकर्ता का मनोबल बढ़ेगा और आगामी चुनाव वह ज्यादा ताकत से लड़ सकती है, सीटों की ज्यादा दबंगई से सौदेबाजी कर सकती है। हालांकि जनप्रतिनिधियों के विलय की प्रक्रिया इतनी आसान नहीं है। लेकिन इससे भी बड़ी चुनौती नेताओंऔर पार्टी कैडर के भावनात्मक समन्वय और आपसी विश्वास की है। क्योंकि कुछ राज्यों में कांग्रेस से टूटी पार्टियां उसी के विरोध में राजनीति कर रही हैं।

इससे भी बड़ा सवाल यह है कि संभावित नई और एकीकृत कांग्रेस का शीर्ष नेता कौन होगा? आलाकमान कौन होगा? क्योंकि कांग्रेस राष्ट्रीय पार्टी होते हुए भी अपने चरित्र में व्यक्तिवाद, वंशवाद और विचारधारा का रामबाण चूर्ण है। चाहे अनचाहे और तमाम खामियों, आलोचनाओ के बावजूद नेहरू-गांधी परिवार ही कांग्रेस की संजीवनी बूटी है। जबकि अलग हुए क्षत्रपों ने उत्तर मुगल काल की तर्ज पर अपनी सल्तनतें कायम कर (पार्टी में विरोध के बावजूद) अपने राजवंश तैयार कर लिए हैं। जैसे कि ममता बैनर्जी के वारिस अभिषेक बनर्जी, शरद पवार की वारिस सुप्रिया सुले हैं। जबकि वायएसआर कांग्रेस के जगन मोहन रेड्डी के बच्चे अभी पढ़ रहे हैं। लेकिन वहां भी जल्द ही किसी परिजन की ताजपोशी हो सकती है। इन नेताओं की पहली चिंता भी वशंजों की ताजपोशी है। ऐसे में कांग्रेस में केन्द्रीय वंशवाद और क्षेत्रीय वंशवाद में कितना तालमेल रह पाएगा, व्यक्तिगत आकांक्षाओं और वर्चस्व की टकराहट क्या मोड़ लेगी, कौन कितना झुकेगा, क्या ममता भाजपा को हराने हर मुमकिन समझौता करेंगी या फिर कांग्रेस एक नए संघीय दल के रूप में उभरेगी, यह देखने की बात है।

ट्विशा शर्मा के पिता की शिकायत से केस में नया मोड़

समर्थ की शादी में डांस करने वाले वकीलों के खिलाफ शिकायत

भोपाल (नप्र)। बहुचर्चित ट्विशा शर्मा की मौत के मामले में सीबीआई की जांच जारी है। इसी बीच, ट्विशा के पिता ने मध्य प्रदेश हाई कोर्ट में शिकायत दर्ज कराई है और 'लीगल एड डिफेंस काउंसिल स्कीम' से जुड़े कुछ वकीलों की भूमिका की जांच की मांग की है। ट्विशा शर्मा के पिता नवनिधि शर्मा ने मध्य प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण और मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस विवेक रूसिया के समक्ष शिकायत दर्ज कराई है।

अधिकारी की भूमिका पर भी उठे सवाल

उन्होंने कानूनी सहायता प्रणाली से जुड़े कुछ वकीलों और एक अधिकारी की भूमिका की जांच कराने की मांग की है। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को कानूनी सहायता उपलब्ध कराने की व्यवस्था के तहत नियुक्त कुछ वकील आरोपी पक्ष का समर्थन करते नजर आए। शिकायत के अनुसार, इन वकीलों की नियुक्ति भोपाल में जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में गिरिबाला सिंह के कार्यकाल के दौरान हुई थी।

समर्थ की शादी में किया था डांस- शर्मा ने शिकायत के साथ एक तस्वीर भी सौंपी है, जिसमें लीगल एड डिफेंस काउंसिल स्कीम के असिस्टेंट एडवोकेट श्रेयस सक्सेना को समर्थ सिंह की शादी में नाचते हुए दिखाया गया है। शिकायत में यह भी दावा किया गया है कि 15 मई को अग्रिम जमानत याचिका पर सुनवाई के दौरान सक्सेना कोर्ट में आरोपी के निजी वकील के साथ मौजूद थे। ट्विशा शर्मा के पिता ने चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिल रीना वर्मा का नाम भी शिकायत में शामिल किया है।

लीगल एड वकीलों ने सक्रिय भूमिका निभाई- उन्होंने सवाल उठाया है कि जब आरोपी के पास पहले से निजी वकील मौजूद था, तो लीगल एड वकीलों ने सक्रिय भूमिका क्यों निभाई। इसके अलावा, ब्यूटी पार्लर और बाद में विवाह समारोह में देखे गए एक अज्ञात व्यक्ति की भूमिका पर भी सवाल उठाए गए हैं। शिकायत में उस व्यक्ति की पहचान तथा घटनाक्रम में उसकी भूमिका को लेकर स्पष्टीकरण मांगा गया है। अदालत में ट्विशा शर्मा के परिवार की ओर से पैरवी कर रहे वकील अंकुर पांडे ने कहा कि यह मामला संबंधित अधिकारियों के समक्ष रख दिया गया है। पांडे ने शुक्रवार को कहा, हमने संबंधित अधिकारियों को शिकायत भेज दी है और अब इस मामले में कार्रवाई का इंतजार कर रहे हैं। शिकायत में लीगल एड वकीलों की भूमिका और आरोपी के साथ उनके कथित संबंधों की निष्पक्ष जांच की मांग की गई है। साथ ही, अग्रिम जमानत याचिका की सुनवाई के दौरान हुए कानूनी प्रतिनिधित्व की समीक्षा करने की भी मांग की गई है।

16 जून को खत्म होगी रिमांड

इस बीच, ट्विशा शर्मा की मौत के मामले में सीबीआई की जांच जारी है। पूर्व जिला एवं सत्र न्यायाधीश गिरिबाला सिंह और उनके बेटे समर्थ सिंह की न्यायिक हिरासत 16 जून को समाप्त हो रही है। एजेंसी उस दिन दोनों को अदालत में पेश करेगी, जहां यह तय किया जाएगा कि उनकी न्यायिक हिरासत बढ़ाई जाए या आगे की पूछताछ के लिए पुलिस रिमांड दिया जाए। सीबीआई ने पहले अदालत को बताया था कि आवश्यकता पड़ने पर वह रिमांड की मांग करेगी। हालांकि, 2 जून को भोपाल सेंट्रल जेल भेजे जाने के बाद से अब तक किसी रिमांड की मांग नहीं की गई है।

रिटर्निंग ऑफिसर की पृष्ठभूमि आरएसएस की

जीतू पटवारी बोले- जीत का प्रमाण पत्र देने सुबह ही पहुंच गए, हमसे मिले तक नहीं

भोपाल (नप्र)। सुप्रीम कोर्ट ने मीनाक्षी नटराजन की याचिका के मामले में कांग्रेस को बड़ा झटका दिया है। मध्य प्रदेश से कांग्रेस की राज्यसभा उम्मीदवार मीनाक्षी नटराजन की याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया है। राज्यसभा चुनाव में रिटर्निंग ऑफिसर ने उनकी याचिका को खारिज कर दिया था। जिसके बाद कांग्रेस ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाई थी। लेकिन कोर्ट ने इस मामले में लगाई गई याचिका को खारिज कर दिया।

हमसे कहा गया 11 बजे मिलेंगे- लेकिन जब हम उम्मीदवारी निरस्त करने के विरोध में भोपाल चुनाव आयोग ऑफिस के सामने बैठे रहे, वहीं सोए तो कोई संज्ञान नहीं लिया गया और हमसे कहा गया कि रिटर्निंग ऑफिसर सुबह 11 बजे मिलेंगे। यानी जिस तरह से रिटर्निंग ऑफिसर ने रवैया अपनाया, वह लोकतंत्र पर काला धब्बा है।

जीतू पटवारी ने कहा- इसी मामले पर केसी वेणुगोपाल जी के नेतृत्व में हमारा प्रतिनिधमंडल आवेदन लेकर दिल्ली स्थित केंद्रीय चुनाव आयोग के ऑफिस भी गया था। मगर हमारे उस आवेदन पर न संज्ञान लिया गया और न हमें वापस कोई निर्देश दिया गया। ये पूरा रवैया दिखाता है कि नरेंद्र मोदी ने लोकतंत्र को मार दिया है।

9 जून को निरस्त हुआ था नामांकन- राज्यसभा चुनाव के लिए कांग्रेस ने मीनाक्षी नटराजन को उम्मीदवार बनाया था। मीनाक्षी नटराजन ने आखिरी दिन नामांकन दाखिल किया था। उसे बाद 9 तारीख को स्कूटनी के दौरान बीजेपी ने नामांकन फॉर्म में तेलंगाना का केस छिपाने की आपत्ति लगाई थी जिसके बाद रिटर्निंग ऑफिसर ने मीनाक्षी नटराजन को अपना पक्ष करने का समय दिया था। दोनों पक्षों को सुनने के बाद रिटर्निंग अधिकारी ने नामांकन निरस्त कर दिया था।

रिटर्निंग ऑफिसर की पृष्ठभूमि पर उठाए सवाल

याचिका खारिज होने के बाद कांग्रेस ने ट्वीट कर बीजेपी पर निशाना साधा है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा- मीनाक्षी नटराजन के नामांकन मामले में जो रिटर्निंग ऑफिसर है, उसकी पृष्ठभूमि संघ की है। इससे पहले जब एक विधायक ने सदस्यता ली थी, तब भी उनकी भूमिका संदिग्ध थी। कल जब भाजपा के तीन राज्यसभा सांसद चुने गए तो रिटर्निंग ऑफिसर सुबह 8:30 बजे ही ऑफिस पहुंच गए थे।

'कोरोना योद्धा की संघर्ष कथा' होगी पुरस्कृत

डॉ. अभय बेडेकर को मिलेगा राजेन्द्र अनुरागी साहित्य अकादमी पुरस्कार

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग की साहित्य अकादमी ने वर्ष 2024 के प्रतिष्ठित अखिल भारतीय और प्रादेशिक पुरस्कारों का ऐलान कर दिया है। इस बार एमपी टूरिज्म बोर्ड के अपर प्रबंध संचालक (एएमडी) और प्रख्यात लेखक डॉ. अभय अरविंद बेडेकर की चर्चित पुस्तक 'कोरोना योद्धा की संघर्ष कथा' को डायरी विधा के तहत राज्य स्तरीय 'राजेन्द्र अनुरागी पुरस्कार' के लिए चुना गया है। खास बात यह है कि इस विधा में अकेले डॉ. बेडेकर की ही कृति ने यह गौरव हासिल किया है।

साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद् (संस्कृति विभाग) द्वारा कैलेण्डर वर्ष 2024 के अखिल भारतीय एवं प्रादेशिक कृति पुरस्कारों की घोषणा कर दी गई है। इस वर्ष अपर प्रबंध संचालक और प्रतिष्ठित लेखक डॉ. अभय अरविन्द बेडेकर की चर्चित कृति 'कोरोना योद्धा की संघर्ष कथा' को डायरी विधा के अंतर्गत राज्य स्तरीय प्रादेशिक 'राजेन्द्र अनुरागी पुरस्कार' के लिए चयनित किया गया है।

साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे ने बताया कि अकादमी द्वारा घोषित इन पुरस्कारों में प्रादेशिक कृति पुरस्कार के विजेता रचनाकारों को 51,000 हजार रुपए की सम्मान राशि के साथ शॉल, श्रीफल, स्मृति चिह्न और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर अलंकृत किया जाएगा। अधिकांश श्रेणियों में जूरी द्वारा दो श्रेष्ठ कृतियों का संयुक्त रूप से चयन किया गया है, जिसमें डायरी विधा के लिए डॉ. बेडेकर की कृति ने यह गौरव हासिल किया है।

डायरी विधा में केवल एक कृति को चुना गया

उल्लेखनीय है कि प्रादेशिक पुरस्कार की डायरी विधा में सिर्फ डॉ. बेडेकर की कृति का चयन किया गया है। बाकी सामान्यतः सभी विधाओं में दो लेखकों की कृतियों का चयन किया गया है। डॉ. बेडेकर की यह कृति कोरोना महामारी के कठिन दौर में अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं द्वारा किए गए अभूतपूर्व संघर्षों, चुनौतियों और जीवंत अनुभवों को समेटे हुए है।

मिनी ट्रक में जा घुसी बाइक चचेरे भाइयों की मौत

बिना बताए घर से निकले थे दोनों, बड़ा भाई बोला- बहन की शादी थी

हरदा (नप्र)। हरदा के हंडिया थाना क्षेत्र में गुरुवार रात बाइक सवार दो चचेरे भाई मिनी ट्रक में जा घुसे। घटना स्थल पर ही दोनों की मौत हो गई। घटना कुसिया के पास करीब साढ़े 9 बजे की है।

जानकारी के अनुसार बाइक सवार दोनों चचेरे भाई बिना बताए घर से निकले थे। घर पर बहन की शादी थी। इसी दौरान उनकी बाइक

पीछे से आइशर वाहन में जा घुसी। घटना की सूचना मिलते ही हंडिया पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने दुर्घटना स्थल का निरीक्षण कर आवश्यक कार्रवाई शुरू की। हादसे के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। पुलिस ने दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भिजवाया है।

टैक्सी ड्राइवरों ने कटोरा लेकर मांगी भीख

फटे कपड़ों में ओला-उबर की नीतियों के खिलाफ प्रदर्शन, बोले- भीख मांगने की नौबत आ गई

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में ऐप आधारित टैक्सी सेवाओं के खिलाफ शुक्रवार को अनोखा प्रदर्शन देखने को मिला। भोपाल टैक्सी चालक संघ के बैनर तले बड़ी संख्या में ड्राइवर बोर्ड ऑफिस चौराहे पर इकट्ठा हुए और फटे कपड़े पहनकर कटोरा लेकर प्रतीकात्मक भीख मांगते नजर आए।

ड्राइवरों ने ओला, उबर और रेपिडो कंपनियों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और आरोप लगाया कि कंपनियों की नीतियों ने उन्हें इस हालात में पहुंचा दिया है। प्रदर्शन के दौरान एक ड्राइवर ने भावुक होकर कहा, भैया, कंपनियों ने हमारी हालत ऐसी कर दी है कि कपड़े तक नहीं खरीद पा रहे। चड्डी-बनियान तक फट चुकी है। रेट इतने कम हैं कि गाड़ी चलाना भी मुश्किल हो गया है।

9 रू. प्रति किमी मिल रहा, खर्च 11 तक: संघ के कार्यवाहक अध्यक्ष श्रवण कुमार शर्मा ने बताया कि वर्तमान में ड्राइवरों को औसतन रू. 9 प्रति किलोमीटर तक ही किराया मिल रहा है, जबकि डीजल, पेट्रोल और सीएनजी के बढ़े दामों के कारण गाड़ी का खर्च रू. 11 प्रति किलोमीटर तक पहुंच गया है। उन्होंने कहा, दो में से एक ही काम हो पा रहा है, या तो घर चला लें या गाड़ी की किस्त

भरें। दोनों एक साथ संभव नहीं है।

सरकार और कंपनियों पर अनदेखी का आरोप- महामंत्री राजेश कुमार नागले ने कहा कि आरटीओ की गाइडलाइन के अनुसार जो किराया तय किया गया है, उसका पालन कंपनियां नहीं कर रही हैं। उन्होंने बताया, 2014-15 में जब कंपनियों ने भोपाल में काम शुरू किया था, तब गाइडलाइन का पालन हुआ। लेकिन बाद में मनमानी शुरू हो गई और अब हालात ऐसे हैं कि ड्राइवरों का जीना मुश्किल हो गया है।

आश्वासन मिलता है, समाधान नहीं- चालकों का कहना है कि वे लंबे समय से अपनी मांगें उठा रहे हैं, लेकिन हर बार केवल आश्वासन देकर मामला टाल दिया जाता है। एक चालक ने कहा, निर्णय कुछ नहीं निकलता, बस आश्वासन देकर निकल जाते हैं।